छंद शास्त्र

किसी भाषा रा काव्य री परख दो भांत सूं हू सकै - (1) अंतर पख सूं अर (2) बारै रा रचना विधान सूं। काव्य रा अंतर या कै माईलै पख सूं मतलब है उणरा भाव पख सूं अर बारै रा पख सूं अरथ है उणरा काळा पख सूं। अे भाव पख अर कळा पख मिळर किणी काव्य नै पूरौ करै। भारतीय काव्य समीक्षा री भांत-राजस्थानी री परख-निरख रा आधार भी अे ही है। हीयै रा अंतस सूं निकळयौड़ा गैहरा भाव जै औपती भाषा अर मोवणा अलंकारां अन्नै छंदा सूं सज्या-संवर्‌या पाठकां सामी आवै तो उण काव्य रौ मान बढ़ै - बो बाव्य सराईजै। इण खातर भाषा रै साथै-साथै शैली, छंद अर अलंकारां री काव्य में खास ठौड़ है। भारतीय भाषावां री जननी संस्कृत रा छंद, अलंकार अर काव्यदोष री पुराणी परम्परा राजस्थानी में भी आई है। ई खातर छंछ अर अलंकारां री परिभाषा अर वांरो विधान समझण सारू संस्कृत काव्य परम्परा री जाणकारी जरूरी है।

संस्कृत पछै पालि, प्राकृत अर अपभ्रंश में पिंगळ शास्त्र नै मानता मिळी। पिंगळ शास्त्र रा हिमायती घणकरा भाट हा। पिंगळ शास्त्र नै चुनौती चारण कवियां दिनी अर वे आपरौ न्यारौ डिंगळ-शास्त्र सिरज्यौ। असल में पिंगळ शास्त्र सूं बेसी छंद अर अलंकार डिंगळ शास्त्र में बपराईज्या।

आज री भारतीय भाषावां में लारला पच्चासैक बरतां ताई कविता सबद रौ बोल-बालो रयौ। पद्य में छंदां रौ हूवणौ जरूरी है ईं अरथ में छंदां री महत्ता संस्कृत अर अपभ्रंश भाषावां में बेसी है पण नई कविता रा कवि पद्य नै एक बार फैरूं काव्य री पांत में बैठाय दीयौ है।

यूं तो राजस्थानी भाषा में घणाई छंद अर अलंकार गिणाईजै है अर वांरा न्यारा-न्यारा भेद, उपभेद है पण अलंकारां में वैणसगाई अर उणरा भेदोपभेद अन्नै दूहा, निवाणी, झमाळ, वचनिका, दवावैत, सुपंखरौ, त्रिंबकड़ो जैड़ा छंदां री छटा न्यारी है।

छंद-छंद सबद सबसूं पैली ऋग्वेद में लिख्यौ मिळै। छंद री व्युत्पत्ति छद् धातु सूं मानीजै जिणरौ अरथ आवर्त करणौ, रक्षा करणौ अर खुस करणौ हुवै। छंद रौ साधारण अरथ मानीज्यौ है - नियमित अक्षरां या मात्रावां में लिख्यौ पद्य-प्रकार। संस्कृत साहित्य में देवी-देवतावां री अस्तुतियां में एक ही छंद रौ लेखन हुयौ है जिणरौ मतलब देवी-देवतावां नै खुस करणो हो। इणी अरथ में राजसभावां में चारण अर भाट जिकी विरूदावली बोलता उणनै भी छंद कैवण लागा। प्रबोध चिंतामणि में इणरौ उदाहरण मिळै -

''तिणी प्रस्तावि पापश्रुत भट्टि मदनकुमार तणा छंद बोल्या।''

अर - ''इहि अवसरि सुश्रुत भट्टि राय विवेक तणा छंद भण्या।''

इणी भांत चरित प्रधान काव्य ग्रंथां नै छंद नाम दैवण री परम्परा भी राजस्थानी साहित्य में देखी जा सकै। ज्यूं राव 'जैतसी रो छंद', 'रामदेवजी रो छंद', 'राजा करणदेवजी रो छंद', 'गोरखनाथ रो छंद' आद पोथयां छंद री इणी काव्य परम्परा नै दरसावै। संस्कृत साहित्य में छंदा री परिभाषा व्याकरणाचार्य पाणिनी रो इण काव्य सूं समझी जा सकै। 'छंदयति - अहलादयति इति छंद:' यू तय करयौड़ी मात्रावां या वर्णां सूं बणयौड़ा छंद ही छंद कहीजै।

काव्य री परिभाषा

काव्यकार रा अंतस नै परस करणवाळौ बो मधुर अर प्रभावशाली कथन जिको मानवी रौ रंजण करतो थको उणनै भावां मे ंलीन कर दैवे – काव्य कहीजै। अैड़ा काव्य रौ सिरजणहार, कवि या काव्यकार बाजै।

साहिय री जिकी रचणा हुवै – सिरजणा हुवै बा मोटे रूप सूं या तो गद्य या पद्य में हुवै। गद्य रौ मतलब हुवै कैवणजोग अर पद्य रौ मतलब हुवै चालणजोग। ईं खातर ही पद्य गतिशील हुया करै अर आ गति आवै छंद में निबद्ध हुवैला ही। पद्य में जिकी गति आवै वा लय सूं भी आवै अर लय रै आग्रह सूं ईं छंद रौ प्रयोग करियौ जावै।

काव्य रा रूप

संस्कृत में सबद शास्त्र, काव्य अर साहित्य न्यारा-निरवाळा अरथ दैवे। शास्त्र चिंतन, मनन अर दर्शन सूं सरोकार राखै। काव्य चावै गद्य में हुवै अर भांवै पद्य में वींरै साथै आख्यान अर परम्परागत प्रतिमानां रौ जुड़यौ हूवणौ जरूरी मानीजै। साहित्य में सिद्धान्तां री परख-पजोख करी जावै। अंग्रेजी सबद ''लिटरेचर'' वास्तै, साहित्य, सबद अनुवाद करयौड़ी है।

भारतीय सहित्य में काव्य व्यापक सन्दर्भ में आयौ है। काव्य रौ मूळ अरथ पद्य नी हुय' र साहित्य है। सौ काव्य – रचना गद्य में ई हुय सकै अर पद्य में ईं। गद्य व्याकरण सूं अनुशासित बोलचार री भाषा हुवै, जदकै पद्य में वर्ण, मात्रा, यति, तम,गति, लय इत्यादि बाबत ध्यान राखीजै। गद्य-पद्य मिल्यौड़ौ काव्य ''चंपू'' बाजै। इणरै अलावा जिकौ काव्य अभिनीत करयौ जाय सकै, उणनै दृश्य काव्य यानी कै नाट्य साहित्य कयौ जावै। दृश्यकाव्य में गद्य अर पद्य दोनुवां रा ई प्रयोग करया जावै। इण तरै दृश्य काव्य भी काव्य ई बाजै, पण इणमें अेक जिकी खास बात हुवै, वा है – संवाद ।

इण भांत मूळ रूप सूं काव्य रा तीन भेद हुवै –

1. गद्य 2. पद्य अर 3. गद्य-पद्य मिल्यौड़ौ ।

छंद शास्त्र

जिण तरै गद्य, व्याकरण रा नियमां बंधयौड़ौ हुवै, उण ऊपर व्याकरण रो अंकुस हुवै उणी भांत पद्य भी छंद विधान रां बंधना में बंधयौड़ौ रैवै। पद्य में अनुशासन खातर छंद शास्त्र रो विधान है। छंद सबद रो अेक अरथ बंधण भी है। पद्य री रचना करण सारू जिण तरै रा बंधना या नियमां री जरूरत पड़ै उणांरौ विधिवत बरणाव, छंद शास्त्र में दियौड़ी है।

छन्द

राजस्थानी छन्द

संस्कृम व्याकरण रो विधान करणिया आचार्य पाणिनी हा, उणारै नाम सूं ही 'पाणिनी व्याकरण' प्रसिद्ध हुयौ। इणी भांत पद्य रो प्रचलित व्याकरण आचार्य पिंगल बणायौ। आचार्य पिंगल रो ओ व्याकरण ही छंद शास्त्र रै रूप में जगचावौ हुयौ।

छंदां रा भेद - (1) मात्रिक (2) वर्णिक

छंदां में मात्रा या वर्ण दो रो विचार हुया करै। जिका छंद मात्रा री गणना रै अनुसार बणै, उणानै मात्रिक छंद अर जिका वर्णां सूं बणै वांनै वर्णिक छंद कया जावै। मात्रिक छंद अर वर्णिक छंदां रा वारै चरणां रै हिसाब सूं तीन भेद है -

1. सम छंद 2. विषम छंद 3. अरधसम छंद

सम छंद

सम छंद वां छंदा नै कैवे जिणांरा च्यारूं चरण, मात्रावां अर वर्णां री गणना सूं एक ढ़ांचै रा बणयौड़ा हुवै ।

विषम छंद

विषम छंदां रा हरैक चरण री मात्रावां या वर्ण न्यारा-न्यारा हुवै ।

अरधसम छंद

अरधसम छंद वांनै कैवै जिणांरा पैला अर तीजा चरणां में अर दूजा अर चौथा चरणां में मात्रावां अन्नै वर्णां रो क्रम एक जैड़ो यां समान हुवै।

यति - यति रो अरथ विराम, रुकाव या विश्राम हुया करै। वर्णां रा उच्चारण में यति मुजब रुक-रुक र बोलण सूं श्लोक में लय आवै अर श्लोक पढतां ही छंद रौ ज्ञान हू जावै।

चरण - हर श्लोक में साधारण रूप सूं चार चरण हुया करै। इणांमे चरण एक अर तीन विसम अर दो अर चार सम कहीजै।

गण - मात्रिक अर वर्णिक छंदां रा लक्षण बतावण खातर छंद शास्त्र में गणां रो विधान हुयौ है। वर्णिक छंदां में तीन आखरां रा समूह नै गण कयौ जावै। हरैक आखर लघु अर गुरु - दो भांत रा हुवै। इण तरै तीन आखरां-वाळा गण रा 8 रूप हू जावै। गाथा छंद में चार मात्र रा नाम नै गण कयौ जावै। आं आठू गणां रा रूप अर नाम आगै दियौड़ा री सारणी सूं समझया जा सकै है -

क्र. सं.	नामगण	रूप	लक्षण	नमूना
1	यगण	।ऽऽ	आदि लघु	यमाता
2	मगण	ऽऽऽ	सब गुरु	मातारा
3	तगण	ऽऽ।	अंत लघु	ताराज
4	रगण	ऽ।ऽ	बीच लघु	राजभा
5	जगण	।ऽ।	बीच गुरु	जभान
6	भगण	ऽ।।	आदि गुरु	भानस
7	नगण	।।।	सब लघु	नसल
8	सगण	।।ऽ	अंत गुरु	सलगम्

छंद शास्त्र में लघु वर्ण सारू ल अर गुरु वर्ण ग रो प्रयोग हुवै। आं गाणां रो सरूप याद राखण खातर एक सूत्र इण भांत है।

''यमाताराजभानसलगम्''

इण सूत्र में सरूआत रा आठ आखर गणां रा अर ल अन्नै ग लघु अर गुरु वर्ण रा प्रतीक है।

गुरु अर लघु वर्ण

छंद शास्त्र में वर्ण दो तरै रा मानीज्या है – ह्रस्व अर दीर्घ। ह्रस्व वर्ण रै उच्चारण में जित्तो बगत लागै, उणरो नाम एक मात्रा है। दीर्घ वर्ण रै उच्चारण में उणसूं दुगणो समै लागै इण सारू उणरी दो मात्रावां मानीजै। छंद शास्त्र में ह्रस्व वर्ण नै लघु अर दीर्घ वर्ण नै गुरु कहीजै। लघु (।)सारू अर गुरु सारू (ऽ) रो संकेत लेखन में हुवै। लघु अर दीर्घ वर्णां री पिछाण नीचै लिख्या नियमां सूं करी जा सकै।

(1) किणी सबद में आयौ वर्ण जे बो सबद री सरूआत में है तो उणरी मात्रा नहीं गिणीजैला अर जे बो वर्ण बीच में है तो उणसूं पैली वर्ण गुरु मानीजैला। जे बो पैली सूंई गुरु है तो भी गुरु ही मान्यौ जावैला।

(2) जिणां सबदां में चद्रं बिंदु रो प्रयोग हुवै, बठै वर्ण गुरु नहीं हुवैला। जिण तरै चाँद, म्है इत्याद। आजकाल राजस्थानी भाषा में चंद्र बिन्दु री जगै सुभीतै सारू अनुस्वार रो ही प्रयोग हुवण लाग्यौ है। ईं खातर अनुस्वार अर चंद्र बिंदु वाळै वर्णां री पिछाण राखणी जरूरी है।

(3) कई बार छंदो में वर्ण या मात्रा रो तालमेल बिठावण खातर किणी मात्रा या वर्ण नै दीर्घ या लघु कर दियौ जावै।

(4) संयुक्ताक्षर 'क्त', 'स्व' रै पैली रो आखर लघु हुवै तो उणनै गुरु मानणौ चाइजै। वर्णिक छंदा रा भी दो भेद गिणाइजै –

(1) गणबद्ध (2) मुक्तक

गणबद्ध छंद – गणबद्ध छंदा रा चारणं में वर्ण अर गण दोनुवा ंरी संख्या तय हुयौड़ी रैवे ज्यूं वंशस्थ, मंद्राक्रांता अर सवैया में रैवे।

मुक्तक छंद – मुक्तक छंदां रा चरणां में फगत वर्णां री ही संख्या तय हुवैगणां या लघु गुरु रौ कोई नियम नहीं हुवै।

साधारण छंद – 32 सूं कम मात्रावां अर 26 सूं कम वर्णां रा छंद साधारण छंद मानीजै।

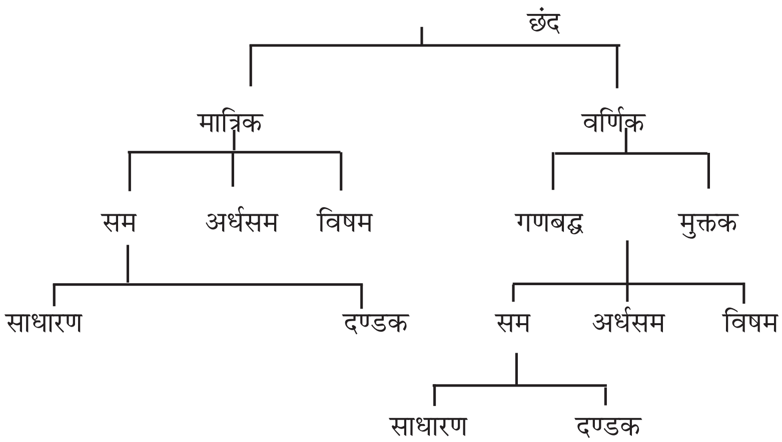

मात्रिकछंद

चौपाई, दूहा, सोरठा, हरिगीतिका, रोळा, उल्लाळा, छप्पय, सरसी, कुण्डळियौ, सार, गीतिका, झूलणा, पद्धरी, सुपंखरो, साणोर, झूलणा।

चौपाई (चौपई)

लक्षण – रघुवर जसप्रकास में चौपाई रा लक्षण एक दूहा में इण तरै दिया है।

बीस–बीस चोपद वरण, दोय बीस दो पाय।
चोप किवत जिण चोपसुं रटीसौ पनंगरायङ्क

चौपाई सम मात्रिक छंद है जिणरा हरैक चरण में 16 मात्रावां हुवै अर आखिर में गुरु–लघु (ऽ।) नहीं व्है।

उदाहरण – चोप अरच हरि चरण, चोप फिर रे परदछण।
चोप करे करजोड़ जनम सरजत आगळ जण।।
चोप करे चित बीच, नांम सिर अगर सु नर हर।
चंनण घस सुत चोप, कमळ त्यूं तिलक चोप कर।।
अत चोप भजन सी वर उचर, ध्यांन हृदय जुत चोप धर।
कवि चहै चोप रघुराजकौ, कर कर चोप स भजन कर।।

दूहो –

लक्षण – ओ मात्रिक छंद है जिणरा पैला अर तीसरा चरण में 13 अर दूजा अर चौथा चरण में 11 मात्रावां

हुवै। इण तरै दोनूं पंक्तियां मायनै सूं हरैक में 24 मात्रावां व्है। रघुवरजसप्रकास में दूहा बाबत लिख्यौ है।

तेरे मत पद प्रथम त्रय, दुव चव ग्यारह देख।
अख सम पूरब उत्तर अध, लछण दूहा लेख।।

दूहा छंद रो भेद –

सोरठो, सांकळियौ अर तूबेरी दूहा रा खास भेद है। नमूना देखीजै –

सुज उलटायां सोरठौ, सांकळियौ आदंत।
मध्यमेळ दूहौ मिळै, तव तूबेरी तंत।।

दूहा रा 23 भेद बतायौड़ा है। इणांमे सुद्ध दुहौ, बड़ो दूहौ अर खोड़ो दूहौ खास गिणावणजोग है।

(1) सकळ सरूप सारदा साची, नारायणी कवहूँ हुवै न नाची।
जगत जनेता जोगण जाची, वर दातार आदि ळगवाची।।

(2) नितु नितु नवला सांढिया, नित नित नवला साजि।
पिंगळ राजा पाठवइ, ढोला तेड़न काजिङ्क

(3) थाणै चाकुर चिड़बड़ै, राजकुरब री हांण ।
कुण राखैला साथियाँ, लोकराज री कांण ।।

सोरठो – ओ मात्रिक छंद है।

लक्षण – इणरा विसम चरणां में 11 अर सम चरणां में 13 मात्रावां हुया करै। सोरठो दूहा सूं उलटो हुया करै।

ओ राजस्थानी भाषा रो सबसूं व्हालौ छंद है। इणं सारू ओ दूहौ आखीजै –

सोरठियो दूहो भलो, भली मरवण री वात।
जोबण छाई धण भली, तारा छाई रात।।

उदाहरण – बाबहिया तू चोर, थारी चाँच कटाविसूं।
रातिज दीन्ही भलो, भली मरवण री वात।।

रजन पद करूं प्रणाम, पद पोच्या जिण पूत नै।
जन गुण तणी लगाम, जिण मुख झेली ढंग है।।

हरिगीतिका –

लक्षण – ओ एक मात्रिक समछंद है, जिणमें 28 मात्रावां अर आखिर में लघु गुरु हुवै अर 16, 12 पर यति हुवै।

उदाहरण – दसमाथ भंज समाथ भुज रघुनाथ दीनदयाळ।
गुह ग्राह ग्रीधक बंध तै गत श्रवण भाल विसाळ।।

सुग्रीव निबळ राशि सरणै सबळ बाळ संधार।
पहजोय किसना नांम परचौ तोय गिरवर तार।।

गीतिका छंद लक्षण – ओ भी मात्रिक सम छंद है अर इणमें 26 मात्रावां अर आखिर में लघु–गुरु हुवै।

इणमें 12/8 मात्रावां पर यति लागै।

उदाहरण – करतार भू अधार केसव धार पांण सुधांनखं।
रघुनाथ देव समाथ राजत मां विसर समानुखं॥

जळ पाज बंध उतारजै कपि साज सेनराव सकाजयां
रसनां किसन्न सु जांम आठ अचार सौ रघुराजयं॥

रोला – ओ मात्रिक सम छंद है ।

लक्षण – रोळा छंद रा हरैक चरण में 24 मात्रावां हुवै। इणमें 11 अर 13 मात्रावां पर यति रैवे। रघुवरजसप्रकास में इण सम्बन्ध में लिख्यौ है –

उदाहरण – औयण मत चौबीस होय जिण रोळा आखत।
भल कवि जोड़ग छंद मांझ, राघौ जस भाखत॥

रघुनाथरूपक गीतां रौ, में रोळा छंद री जागणकारी की इण तरै दीनी है।

रोळा छंद सु नाम नागपति पिंगळ राख्यो।
तुक तुक माहे चतुर कळा चवु विसति भाख्यो॥
हिक दस पर विस्राम सरब जण चिंता हरणूं।
भणूँ सदा हम सकळ बिमळ कवि कंठाभरणूं॥

रोळा रौ उदाहरण –

अनुवा उपत अनूप जुगत कवत रस जाणै।
अमल ग्रंथ उजळा, पिंगळ छंदां परमाणै॥
काव्य गीत कवत दूहा, गाहा निसाणी।
कह वातां कहूक बडा मुखां बखाणी॥

उल्लाळा – ओ एक मात्रिक छंद है।

लक्षण – इण छंद रा विषम चरण में 15 अर सम चरण में 13 मात्रावां हुवै। इण तरै ओ 28 मात्रावां रौ छंद है।

रघुनाथरूपक गीतां रौ में उल्लाळा छंद रौ बरणाव करतां लिखीज्यौ है

उल्लाळ छंद वसु दाये 28 कल बिरति पंच दस 15 ऊपरा।
घर दाये दोय इक तीन दुवदोय एक दुत धूपरा॥
कल तेरह दोहा सम सदा खट दो–दो इक दोय कर।
ओ नियम छोड़ पिंग्ल कहै आखर एक न उचर॥

उल्लाळा रौ उदाहरण –

सुख हसाथ दैव सुद अय, सरब बिद सारां फिरै,
मुख सूं हम माया कहै, कीतर क्यूं समवड़ करै॥

रघुवरजसप्रकास में उल्लाळा सारू लिख्यौ है
पनरै तेरह मत पय छंद उल्लाळ पिछांणजै ।

रघुवरजसप्रकास में उल्लाळा रा पांच भेद नीचे मुजब बताइज्या है –

(1) रस उल्लाळा (2) स्यांम उल्लाळा (3) छप्पय उल्लाळा (4) बरंग उल्लाळा (5) कांम उल्लाळा ।

छप्पय लक्षण – ओ मात्रिक छंद है ।

रोला अर उल्लाळा रै मैळ सूं छप्पय बणै।
सरू में रोळा रा चार चरण अंत में उल्लाळा व्है॥
उल्लाळा कठैई 26 अर कठैई 28 मात्रावां रौ हुवै।

उदाहरण –

बंदवीर बजरंग कीसबर मंगळ कारी,
समरमात सरसती विमल कविता बिसतारी।
सदगुरु प्रणय किशोर सचिव अमरेश सवाई,
करे पिता जिमि कृपा तिकण गुण समझ बताई।
मो मत प्रमाण कवि मंछ कह, सुकवि बाण ग्रंथाणं सुण।
रस–गाथ गीत पिंगळ रचे, गहर कहूं रघुनाथ गुण॥

सरसी लक्षण – इण छंद रा हरैक चरण में 16/11 रा विराम सूं 27 मात्रावां अर आखिर में गुरु लघु हुवै। ओ मात्रिक समछंद है।

उदाहरण – पंथई पयठं वल बयठई, झाउ अवझड कुरीय।
उंबराधी छाइ अंबर सूझवई नहू सूरीयङ्क
पर भवे गोई पतंग पाए, दूह भ्रह बडबडाई।
तउ अपारजे अमंग आवधु, अतुल एहवा अनुभि॥

झमाळ–ओ मात्रिक छंद है।

झमाळ राजस्थानी रौ जूनौ अर व्हालौ छंद है। राजस्थानी रा नामी लक्षण ग्रंथ वरजसप्रकास'' में झमाळ री परिभाषा, लक्षण अर उदाहरण इणभांत दियौडा है।

अथ गीत झमाळ लक्षण –

दूहा – दूहौ पहलां दाखजै, चंद्रायणौ सुपच्छ।
दूहा उलटै चवथ तुक, सोय झमाळ सुलच्छ॥
दूहो अर चन्द्रायणौ, विहुवै मना छंद।
यां लक्षण कहिया अगै, पिंगळ मांझ कव्यंद॥

अरथ

''पैलां तौ दूहौ होय। पछै चंद्रायणौ होय। दूहा री नौथी तुक दोय बखत पढी जाय

सौ झमाळ नांमी गीत कहीजै। दूहौ चंद्रायणौ दोई मात्रा छंद छै सौ यण पिंगळमें लक्षण दोयांरा कहया छै, सौ कांम पड़ै तो देख लीज्यौ। दूहौ पै ली तुक मात्रा तेरै। दूजी मात्रा इग्यारै। तुक तीजी मात्रा तेरै। तुक चौथी मात्रा इग्यारै। चंद्रायणौ तुक प्रतमात्रा इकीस। अंत रगण सौ चंद्रायणौ। आद दूहौ पछै चंद्रायणौ सौ झमाळ नामां गीत कहावै।''

जिण तरै पिंगळ काव्य परम्परा में ''छप्पय'' सबसूं प्रिय छंद रियौ है उणी भांत राजस्थानी काव्य में 'झमाळ' व्हालौ रियौ है।

लक्षण –

झमाळ में पैली दूहो फैर एक चंद्रायण। दूहा री चौथी तुक चंद्रायण रै पैलां दोहराइजै। चंद्रायण रा पैला चरण में 11 मात्रावां हुवै। इण तरै एक तुक में 21 मात्रावां अर अंत में रगण हुवै।

कवि मंछ 'रघुनाथ रूपक गीतां रो' में लिखै।

दूहै पर चंद्रायणो, घरै उजाळो धार।
गीतां रूप झमाळ गुण, वरणै मंछ विचार।।

झमाळ में पैली पूरो दूहो, फैर पांचवा चरण में दूहा रौ आखरी चरण पाछौ आवै। छठा चरण में 1 मात्रावां अर दूहा रै पछै चंद्रायण छंद आवै।

अथझमाळगीत उदाहरण –

धाड़ा राघव धुर–धमळ, अवनाड़ा अणबीह।
ऊबेड़ण जाड़ा असह, सुज धांसाड़ा–सीह।।
सुज धांसाड़ासीह, अबीह अचल्लणा।
झूसर खाग तियाग भुजाडंड झल्लणा।।
रहचर दस सिर जिसा, असह मझ राड़ रे।
बेढक अंकी बार धनंकी धाड़ रेङ्क
रखवाळण जिग रायहर, रजवट पाळण राह ।
दिया लखण रघुनाथं दहुं त्रप रिख साथ निबाह।।
त्रप रिख साथ निबाह, नंद रख नाहरां ।
पंथ ताड़का पित, जिका कथ जाहरां।।
परसुबाह हत सर, मारीच अताळियौ।
जिग कोसिक रिखराज, राज रखवाळियौ।।

छंद पाद्धरी (पद्धरी) – ओ मात्रिक छंद है।

'रघुवरजसप्रकास' में इणरा लक्षण इण भांत दिया है।

लक्षण – अख मत्त सोळ यक जगण अंत ।

पाद्धरी छंद कवि जे पठंत ङ्क

इण में 16 मात्रावां अर अंत में 1 जगण हुवै।

उदाहरण – राजाधिराज माराज राम।
ते ताज सीस आळम तमाम।।
''अरिहंत'' भरत अग्रज अहेस।
जांनुकीकंत मतिवंत जेसङ्क
तन स्यांम घणा घण रूप ताय।
पट पीत बरण तड़िता प्रभाय।।
आजांणबाहु अद्धितीय अंग।
निज पांण बांण धनु कटि निरवंग।।
सीय बांम अंग मुख अग्र सेख।
बजरंग पाय सेवत बिसेख।।

इण रूप ध्यान निज अवध ईस।
कर भजन ''किसन'' निस नि कवीस॥

सुपंखरो छंद –

लक्षण – ओ मात्रिक छंद है ।
'रघुवरजसप्रकास' में इणरो लक्षण इण तरै दियोड़ौ है।

धुर तुक अखर अठार धर, चवद सोळ चवदेण।
सोळ चवद क्रम अंत लघु, जपै सुपंखरौ जेण ॥

सुपंखरौ गीत वरण छंद तिणरै मात्रा गिणती नहीं। अखिर गिणती होय। जींरै पहली तुक रा आखर अठारै होय। दूजी तुक आखर चवदै होय। तीजी तुक आखर सौळै होय। चौथी तुक आखर चवदै होय। पाठला दूहां री पैली तुक हर तीजी तुक आखर सौळै हाये। दूजी, चौथी, तुक आखर चवदै होय। तुकांत लघु होय। जीं गीत नै सुपंखरौ कहीजै।

खास बात – अठै तुक सूं मजलब सूं है अर तुकांत रौ मतलब है चरण रै अंत में तुक हुवणो।

उदाहरण – पैंडा नीतरा चलाक धू छ– च्यार भंज पलीत रा।
सूर धीर चीतर अठेह ओप संस॥
धीतरा कीतरा रिखी सुकंठ मीतरा धनौ।
वाहरू सीतरा राम अदीतरा वंस॥
वंदनीक पायरा गायरा दुजां विसावीस।
आसुरां भंजणा आडै घायरा अमाव॥

झूलणा – ओ मात्रिक छंद है ।

लक्षण – इणमें कुल 36 मात्रावां हुवै। तीन चरणां में 10–10 अर एक में 6 मात्रावां व्है। हरैक चरण रै अंत में यगण व्है।

'रघुवरजसप्रकास' में झूलणा रा लक्षण इण सोरठा सूं दरसाया है।

बीस मत्त विसरांम, दुवै सतर गुरु अंत दस।
तीस सात मत तांम, जिण पद छंद सझूलणाङ्क

उदाहरण – वेद चव भेद खट तरक नव व्यारण वळै खट भाख जीहा बखांणै।
भांत पौरांण दस आठ पिंगळ भरथ, उगत जुगतां तणा भेद आंणेङ्क
राग खट तीस धुनिब्यंग भूखण सुरस पात पद।
जिकै विण समझ चंडूल पंखी जिंही जे न रघुनाथ चौ नांम जांणेङ्क

त्रबंकड़ो – गीत

त्रबंकड़ो राजस्थानी रौ चावौ गीत छंद है।'रघुवरजसप्रकास' में इणरा लक्षण यूं दिया है –

दूहौ – धुर मत्ता अठार घर, सोळह तुक सरबेण।
गिण तिण दोय तुकंत गुर, जप त्रबंकड़ो जेणङ्क

अरथ

जीं गीतकै पहली तुक में मात्रा अठारा अर सारी ही तुकां मात्रा सौळा होय। तुकांत दोय गुरु आखिर होय जी गीत नै त्रबंकड़ो कहीजै। पैली तुक अठारै होय अर लारली परैई तुकां मात्रा सोळै–सोळै होय।

अथत्रबंकड़ो गीत उदाहरण

मुखहूंता भाख ''किसन'' महमाहण,
प्रभु नित भीड़ साच परवा रे।
ग्राह जिसा अधमां दीन्ही गत,
तोनूं राधव कांय न तारै॥

साणौर छंद – ओ मात्रिक छंद है।

'रघुवरजसप्रकास' में साणोर छंद रा लक्षण बतावतां की चौपई लिखयौड़ी है।

लक्षण – धुर तुक कळ तेबीसह धार, विखम बीस सतर विचार।
लघु गुरु मोहर क दु गुरु मिळाय, सौ प्रहास सांणौर सुभाय॥
वीस विखम तुक सम दस आठ, पात गुरु लघु मोहरै पाठ।
समझ सुध सांणौर सकोय, जिण मोहरै गुरु लघु कविजोय।
सुज मिळ सुध प्रहास सुजांण, वडौ जिकौ साणौर बखाण।

इणरौ मतलब ओ कै बड़ा सांणौर रा पैला पद में 23 अर दूजा में 16 मात्रावां अर पछै तुक आवै। इणरा तीजा चरण में 20 अर 16 मात्रावां अर पछै तुक आवै।

भेद – साणौर छंद रा बड़ौ साणौर, सुद्ध साणौर, प्रहास साणौर, छोटी साणौर आद भेद बताइज्या है।

उदाहरण – करी चूर कुळ सुभावहूत साहूळ कह,
विधु नखित्र, सोभ भरपूर बरसै।
कमळ–भवहूंत कहजै दूजां नूर कुळ,
सूर कुळ दासरथहूंत सरसै॥

निसांणी छंद – निसांणी राजस्थानी रौ एक महताऊ अर चावौ छंद है। किणी महापुरुष या घटना री याद नै बणाई राखण खातर खार तौर सूं इण छंद री सिरजणा व्है।

लक्षण – ओर एक मात्रिक छंद है जिणरी एक तुक में तेईस मात्रावां आवै अर एक तुक रा विभाग अर विश्राम दोय हुवै। इण तरै निसांणी छंद 23 मात्रावां सूं बणै अर 13 अर 10 पर यति हुवै।

'रघुवरजसप्रकास' कार इण बाबत लिख्यौ है।

दूहौ – छै नीसांणी छंद रै, मत तेबीस मुकांम।
मांझ अेक तुक त्रदस दस, वदै दोय विसरांम॥

अरथ

निसाणी छंद रै एक तुक प्रत मात्रा तेबीस आवै। इण लेखे तौ निसाणी मात्रा छंद छै नै एक तुक रा विभाग तथा विस्राम दोय छौ। एक पहलौ विस्रांम तौ मात्र तेरै ऊपर होवै। दूजौ विस्रांम मात्रा दस पर होवै यौ लक्षण छै। पैली मात्रा असम चरण छंद कहया जठे छंद निस्रेणिका कहयौ, सोई निसांणी छंद जांणणौ। जिसक च्यार प्रकार रा छै सौ फेर कहां छां।

दूहा – रे नीसांणी छंद रा, पढ़िया च्यार प्रकार।
तिण लछण निरणै तिकौ, वरणै सुकव विचार
अेकण दू लघु तुंकत अख, बीजी गुरु लघु अंत।
अंत तीसरी लघु गुरु, चौथी बि गुरु तुकंत।

ऊपर लिख्या दूहां रौ अरथ करतां कयौ गयौ है कै निसांणी छंद में हरैक चरण (एक तुक) में प्रत प्रति मात्रा तेबीस हुवै। इण निसाणी रा चार प्रकार है। अेक निसाणी में तो तुकंत दोय लघु आखर हुवै। दूजी में तुकंत आद गुरु अर अंत में लघु हुवै। तीजा में तुकंत आद लघु अर अंत गुरु हुवै। चौथी में तुकंत दोय गुरु करणगण हुवै। तुकंत रौ मतलब है चरण रै आखिर में ।

इण भांत निसांणी रा चार भेद है –

(1) गरभितनामां निसांणी
(2) दुमळा नांम जागंड़ी
(3) दुतिया दुमिळा निसांणी
(4) सुद्ध निसांणी

निसाणी रा कुल 12 भेद बताइज्या है। जिका इण मुजब है –

(1) सुद निसांणी (2) गरवत निसांणी (3) घग्घर निसांणी (4) पैड़ी निसांणी (5) सिरखुली निसांणी (6) सोहणी निसांणी (7) रुपमाळा निसांणी (8) मारू निसांणी (9) सिंहचली (10) झींगर निसांणी (11)दुमिळा निसांणी (12) वार निसांणी ।

उदाहरण (सुद्धनिसांणी जांगड़ी)

तै रघुनाथ विसारिया, त्रिहु ताप तपणा।
छूटा गरम ग्रभवास में, बह बार छपांणा।।
धरधर तन असीचियार लख जोणां धपणा।
खिण खिण आव संसारह, बुदबुद ज्यूं खपणा।।
कर कर पर उपकार पुन, तन प्राचल कपणा।
संसारी दाभगळ खेल, जांणै जिम सपणा।।
आखर–दिन अवधेस विण, नह कोई अपणा।
जिण कज हे मन रामं रामं, जीहा नित जपणा।।

कुण्डळियौ छंद –

लक्षण – ओ मात्रिक छंद है। ओ रोळा अर दूहा छंद रै मैळ सूं बणै। इणरा लक्षण 'रघुवरजसप्रकास' में की इण भांत बतायौड़ा है।

पहलां दूहौ एक पुण, आद अंत तुल जेण।
पहलटै धुर पूठा कवित, तव कुंडळियौ तेण।।

उदाहरण – जपै रसण रघुवर जिकै, अधत्यां कपै अमांण।
जनम मरण सुधरै जिाकं, जे बड़भागी जांण।।
जे भड़भागी जांण, लाभ तन पायां लीधौ।
त्या जिग किया तमाम, कांम सुक्रत ज्यां कीधौ।।
वां व्रत किया अनेक, हिरण दे दे विप्रांहथ।
ज्यां सधिया अठ जोग, त्यां किया कौटक तीरथ।।
धन मात पिता जिण वसधर, कळुख तिकां दरसण कपै।
कवि किसन कहै धन नर तिकै, रसण रघुवर जपै।।

वचनिका –

''वचनिका'' संस्कृत भाषा रा ''वचन'' सबद सूं बण्यौ है जिणरा वाक्य, कथन, संकळप, धार्मिक उपदेशात्मक कथन, अनुवाद, आदेश, पुनरावर्तन, उक्ति आद अरथ दियौड़ा है। राजस्थानी साहित्य में 'वचनिका' गद्य विध, गद्य रो अेक खास छंद अथवा गद्य री अेक खास शैली रै रूप में मानीजै है। डिंगळ रा नामी लक्षण ग्रंथ – '**रुघनाथ रूपक** गीतां रो' अर 'रघुवरजसप्रकास' में वचनिका नै गद्य रो अेक छंद मानर उणरा लक्षण बताया है।

''वचनिका'' वा रचना है जिणमें गद्य अर पद्य दोनूं मिलयौड़ा हुवै अर हरैक वचन या वाक्य तुकांत हुवै। राजस्थानी रा सिरै रीति ग्रंथ ''**रुघनाथ रूपक गीतां रो**'' में दवावैत री तरै वचनिका रा भी 'पद्य बंध' नाम सूं दो भेद बताया है।

'रघुवरजसप्रकास' में लिख्यौ है –

बैत दवा, जिम वचनका, पद गदबंध प्रमाण।
दुय दुय विध तिणरी दखूं, सुणजै जका सुजाण।।

दोय भेद वचनका रा एक पदबंध दूजो गदबंध, सू पदबंध,
दोय भेद एक तो वारता दूजी वारता में मोहरा राखणां।
दोय गदबंध वचन का है एक तो आठ मात्रा रो पद हुवै,
दूजी गदबंध में बीस मात्रा रो पद हुवै।।

विद्वानां री आ मानता है कै वचनिका में तुकान्त गद्य रै साथै पद्य भी मिलयौड़ौ हुवै। आं रचनावां में पद्य ज्यादा अर गद्य कम हुया कै। ओ गद्य अलंकारा, मधुरता अर तुकान्तता सूं भरियो पूरा हुवै। किणी प्रबन्ध रचना रै बीचाळै पद्य अन्नै गद्य लेखन री आ परम्परा राजस्थानी साहित्य में जुणां जूनी है। राजस्थानी साहित्य में तुकान्त गद्य, वचनिका अर अतुकान्त गद्य ''वारता'' कहीजण लाग्यौ। वचनिका रीखास बात आ है कै राजस्थानी साहित्य में वचनिका रा जिका तीन खास अर्थ अर भेद मानीज्या है वे नीचै लिख्या है –

(1) गद्य री एक खास शैली या खास छंद रै रूप में ।
(2) गद्य टीका, व्याख्या या अनुवाद ग्रंथ रूप में ।
(3) गद्य-पद्य मिश्रित खास काय रूप या काव्य विधा।

(1) गद्य छंद रै रूप में वचनिका –

'रघुवरजसप्रकास' अर 'रुघनाथ रूपक गीतां रो' में 'वचनिका' नै गद्य रो एक खास छंद मानर उणरा लक्षण बतायौड़ा है।'रघुवरजसप्रकास' में 'वचनका' नै दवावैत री तरै गद्य छंद मान्यौ है।

गद्य पद्य बे जगत में, जाण छंद की जात।
सम पद पद्य सराहजै छूटक गद्य छ जात।।

'रुघनाथ रूपक गीतां रो' में 'वचनिका' रा पदबंद अर गदबंध भेद बताया है अर वांरा भेद अर लक्षण बताया है।

बैत दवा, जिम वचनका, पद गदबंध प्रमांण।
दुय दुय विध तिणरी दखूं सुणजै जका सुजाण।

(2) गद्य टीका, व्याख्या या अनुवाद ग्रंथ रूप में –

साधारण गद्य में लिखी टीकावां, व्याख्यावां अर अनुवाद री पौथ्यां 18वीं अर 19 वीं सदी में 'जैन वचनिका' नावंसूं लिखीजी है। इणामें भाव दीप वचनिका, **श्लो**कसार वचनिका, हरिवंशरपुराण की वचनिका,

परमात्म प्रकाश–वचनिका, चरित्रसार की वचनिका वर्द्धमान पुराण वचनिका, तत्वार्थसूत्र–वचनिका, भक्तमरस्तोत्र–वचनिका–की खास है। अनुवाद वचनाकि रै रूप में 'आईने अकबरी की भाखा वचनिका' प्रसिद्ध है।

(3) गद्य पद्य मिश्रित खास काव्य रूप –

राजस्थानी साहित्य रो ओ साहित्यिक रूप ही वचनिका संज्ञक रो सबसूं ज्यादा जगचावौ रूप है। इणनै संस्कृत साहित्य रा चम्पू काव्य परम्परा रो रूप कैय सकां हां। कई विद्वानां री मानता है कै छंद प्रधान प्रबन्ध रचना रो नाम वचनिका पड़ग्यौ। 'वचनिका' सबद किणी चरित नायक रा किणी खास वीरोचित काज रौ गौरव–गान करणवाळली गद्य–पद्य मिज्यौड़ी रचना रो नाम है। अे वचनिकावां शौर्य, भगती अर सिंणगार रस सूं भरीयौड़ी मिळै।

खास वचनिकावां है –

(1) अचळदास खीची री वचनिका, सिवदास गाडण री
(2) राठौड़ रतनसिंघ – महेसदासेत री वचनिका
(3) मातजी री वचनिका

दवावैतरी परिभाषा अरलक्षण –

'रघुवरजसप्रकास' में 'गद्य छंद' रा लक्षण देता किसनाजी आढा लिख्यौ है–

गद्य पद्य बे जगत में, जांण छंद की जात।
सम पद पद्य सराहजै छूटक गद्य छ जात।
दवावैत फिर बात दख, जुगत वचनका जांण।
औछ अधक तुक असम अे, बीदग गद्य बखाण।।

दवावैत रा उदाहरण –

'रघुवरजसप्रकास' में दवावैत अर वचनिका रा उदाहरण नीचै मुजब दिया है।

महाराजा दसरथ के घर रामचंद्र जनम लिया।
जिस दिन सै आसरू नै ऊदेग देवतूं नै हरख किया।।
विसवामित्र मख–रख्या के काज अवधेस तै जांच लिये।
महाराजा दसरथ उसी बखत तईनाथ किये ।
सात रोज निराहर एकासण सनद्ध रहै।
रिखराजका जिगकी रछया काज रजवाटका बिरुद्ध भुजदंडू गहे।
सुबाहूकूं बाणसे छेद जमराज के भेट पुहुचाया।
मारीच के ताई वाय बांणसे मार उडाया।
रज पायसे तारी गौतम की धरणी।
खंडपरसका कोदड खंड कर जानुकी परणी।
अवधकूं आते दुजराजकूं सुद्ध भाव किया।
जननीसे सलाम कर सपूतका सिरमोड़।
अरोड़ का रोड़ ।
गौ बिप्रूं का पाळ।
अरेसूं का काळ।
सरणायूं साधार।
हाथ का उदार, दिलका दरियाव।

रजवाट की नाव।
भूपूं का भूप साजोतका रूप।
काछवाचका सबूत।
माहाराज दसरथ का सपूत।
भरथ लछमण सत्रुघणका बंधु।
करूंणा का सिंधु।

वचनका –

हांजी ऐसा महाराजा रामचद्र असरण–सरण।
अनाग्थ नाथ बिरदकूं धारै।
सौ ग्राह कू मार न्याय ही गजराज कू तारै।
और भी नसरिघ होय प्रवाड़ा जगजाहर किया।
हरणाकुसकूं मार प्रहलादकूं उबार लिया।
प्रळैका दिन जाणं संत देस उबारणकूं मच्छ देह धारी।
सतब्रतकी भगती जगजाहर करी।
ऐसा स्त्रीरामचंद करणानिध।
असरण–सरण न्याय ही वाजै।
जिसके ताई जेता बिरद दीजै जेता ही छाजै॥

''वचनिका'' अर ''दवावैत'' में अन्तर –

यूं तो ''वचनिका'' अर ''दवावैत'' में इत्तो गेहरो रूपसाम्य है क आं दोनुवा में फरक बतावणौ दोरो है। फैर भी अंतर इण भांत दरसायौ जा सकै।

भाषा री दीठ सूं –

वचनिका री भाषा अपभ्रंश भरी राजस्थानी मिळै तो 'दवावैत' री भाषा उर्दू–फारसी शब्दावळी री भरमार वाळी है। यूं तो 'वचनिका' में भी साधारण बोलचाल रा उर्दू–फारसी सबद लिख्या मिळै पण दवावैत में तो वांरी भरमार है। श्री नरोत्तमदास स्वामी रै मत सूं वचनिका री भाषा राजस्थानी है जदकै दवावैत री भाषा खड़ी बोली या उर्दू मिश्रित हिन्दी है।

रचना काल री दीठ सूं –

'वचनिका' लिखण री परम्परा चौदहवीं सदी सूं सरू हूयगी ही जदकै दवावैत सतरहवीं सदी सूं पैली री नहीं मिळै। 'नरसिंघ गौड़ री दवावैत' सबसू पुराणी गिणीजै अर उणरौ रचना समै सतरहवीं सदी है। इण तरै 'वचनिका' अर 'दवावैत' – राजस्थानी री मेहताऊ अर गिणावणजोग गद्य विधा या शैली है। कई विद्वान 'वचनिका' नै संस्कृत रा चम्पू काव्य रै साव नैड़ी मानै है। चम्पू काव्य भी गद्य–पद्य मिश्रित रचना है। चम्पू काव्य री व्याख्या करतौ 'साहित्य दर्पणकार' लिखी है – 'गद्य पद्यमय वाक्य चम्पूरित्यभिधीयते।' – पण चम्पू काव्य अर 'वचनिका' में फरक ओ है के 'वचनिका' तुकान्त गद्य–पद्य रचना है – चम्पू में तुकान्तता रौ न तो महत्त्व है अर न ही ओ जरूरी है।

राजस्थानी भाषा में 'वचनिका' नै 'वचनका' भी कैवे है।

दवावैत –

पुराणा राजस्थानी गद्य री न्यारी–निरवाळी विधा या प्रकार रै रूप में दवावैत रचनावां गिणईजै। जिणमें गद्य रा

छोटा-छोटा वाक्य खण्ड इण भांत राख्यौड़ा हुवै क गद्य में पद्य जिस्यौ आणंद आवै। दवावैत साहित्य में अनुप्रास विधान अनै तुकबंदी संस्कृत री वृतगंधी शैली री याद ताजा करा दैवे। इण तरै दवावैत राजस्थानी भाषा री अनूठी विधा है। महताब चंद खारैड़ 'रघुनाथ रूपक गीतारो' में दवावैत बाबत लिख्यौ है - ओ कोई छंद नहीं है जिणमें मात्रावां, वरणां या गणां रो विचार हुवै। आ तो अन्त्यानुप्रासमय गद्य चाल है। अन्तयानुप्रास, मध्यानुप्रास अर किणी तरै सानुप्रास या चमक लियौड़ी गद्य रो भेद है। राजस्थानी छंद शास्त्र री नामी पोथी 'रघुनाथ रूपकगीतां रो' में कवि मंछ दवावैत सारू लिखै -

तवै मंछ कवि है तिके, दवावैत विध दोय।
एक सुद्धबंध होत है, एक गद्धबंध होय॥

मछ कवि दवावैत रा दो भेद बताया है एक ''सुद्धबंध अर्थात पदबंध'' जिणमें अनुप्रास मिलायौ जावै अर दूसरों 'गद्यबंध' जिणमें अनुप्रास नहीं मिलाइजै। आं दोनूं भेदां रा उदाहरण नीचै दिया जा रिया है।

पदबन्ध दवावैत -

प्रथम ही आयोध्या नगर, जिसका बणाव।
बारह जोजन तो चौड़ो, सौले जोजन की छाव।
चोतरफूँ के फैलाव, चौसठ जोजन के फिराव।
तिसके तले सरिता, सरिजू के घाट।
अत उतावल सूं वहे, चोसर कोसों के पाट।
बड़ी बड़ी किताबूं में, जिस गंगा का बखाण।
केती बार नगर कूँ, मेली निरवाण।

कवि मंछ गद्य बंध दवावैत रो उदाहरण दैवतो लिखै -

कहे मंछ इतरी कही, पदबन्ध नाम प्रबन्ध।
दवावैत फिर दूसरी, कहूं इमै गदबन्ध॥

दोय तो दवावैता तिणमें दवावैत में मात्रा रो नेम नहीं नै गदबंध में चोबीस मात्रां रो पद में प्रमाण हुवै। हाथियो के हलके खंमूठाणा तै खौले। अेरापत के साथी भद्र जाति के टोले। अत देहु के दिग्गज विंध्याचल के सुजाव। रंग रंग चित्रे सुंडा उंडू के बणाव। झूल की जलूसे वीर घंटुके ठणके। बादलो की जगमग भरे भौरों की भकी भणके। कल कदमूंके लंगर भारी कनक की हूंस जवाहर के जेहर दीपमाला की रूस भालू के आडंबर चहुँ तरफ कूं भाखे माहुतनै गज अैसा हाजर कर राखे, वरणू वरणू के विलास खेतु में कायम आरसी से मंजुल।

अजैताईं नीचै लिखी दवावेतां सामी आई है -

(1) नरसिंहदास गौड़ की दवावैत - भाट मालीदास री
(2) जिनसुख सूरि दवावैत मजलिस-जैन कवित रामविजय
(3) महारावळ लखपत दवावैत - कुंअर कुशल
(4) जिनलाभसूरि दवावैत - कवि वस्तपाल
(5) महाराज अजीतसिंहजी की दवावैत - द्वारकादास दधिवाड़िया
(6) महाराजा सरदारसिंह जी की दवावैत - अज्ञात
(7) महाराजा रतनसिंहजी की दवावत - दयालदास सिंढायच
(8) ठाकुर रघुनाथसिंह जी की दवावैत - दुर्गादत बारहठ
(9) सुपना मध्य की दवावैत - दुर्गादत्त बारहठ
(1̂) राय जी भगवानदासजी की दवावैत - बारहठ खुमाण
(11) कुंवर संग्रामसिंहजी की दवावैत ।

राजस्थान में ''वैत'' अर ''दवावैत'' दोनूं भांत री रचनावां मिळै है।

वर्णिक छंद

1. मंदाक्रांता, 2. बसंत तिलका, 3. वंशस्थ, 4. शिखरिणी, 5. चंपकमाळ, 6. भुजंगी, 7. त्रोटक (तोटक), 8. प्रतिमाक्षर, 9. पंच चापमर, 10. घणाक्षरी, 11. सवैया, 12. निसाणी।

ऽऽऽ ऽऽ। ।।। ऽऽ। ऽऽ। ऽ ऽ

मंदाक्रांत छंद म भ न त त ग ग ओ वर्णिक समछंद है।

इसमें हर चरण में 17 वर्ण अर 4,6,7 परयति हुवै।

लक्षण – 'रघुवरजसप्रकास' रैमुजब मंदाक्रांता रा लक्षण –

मगण भगण फिरनगण मुणि, तगण दोय फिर जोय।
करण एक अहराज कहि, मंदाक्रांता होय।।

उदाहरण – सीता सीतारमण हरही नेक संताप होय।
मीता मींता सकुळ धर ही भेख लज्जा समंतां।।
माधौ माधौ रसण जपही, भाग छै जेण मोटौ।
त्यांरा दासां रसरब सुख रे आथरौ नांहि तोटौ।।

बसंत तिलका लक्षण – ई छंद में 1 तगण, 1 भगण, 2 जगण अर 2 गुरु हुवै।
(त, भ, ज, ज, ग, ग = 14) ओ वर्णिक समछंद है।

उदाहरण – सारंगपांण जय रांम तिलोक स्वामी।
भूपाळ भुजडंड प्रचंड भांमीङ्क
भूतेस चाप छिनमेक चढाय भंज्यौ।
राजाधिराज सिय मांनस कंज रंज्यौ।।

वंशस्य – ओ वर्णिक छंद है।

लक्षण – इणमें 1 जगण, 1 तगण, 1 जगण अर 1 रगण हुवै। इण छंद रा हरैक चरण में 12 वर्ण हुया कै।

चंपकमाला – (भ, म, स, ग)

लक्षण – इणमें एक भगण, कए मगण, एक सगण अर एक गुरु व्है। ओ वर्णिक छंद है।

उदाहरण – गोह सरीखा पांमर गाऊं, ब्याध कबंधा ग्रीध बताऊं।
नै सट पापी गौतम नारी, ते रज पावां भेटत तारी।।
दैव सदा दीनां दुख दाधौ, रे भज प्रांणी भूपत राघौ।।

शिखरणी – (ल, ग, न, स, भ, ल, ग अथवा य, म, न, स, भ, ल, ग)

लक्षण – इण वर्णिक छंद में एक रै बाद एक यगण, मगण, नगण, सगण अर भगण रै अंत में लघु गुरु हुवै।

उदाहरण – तवौ राघौ करम अघ दाघौ तन तणा।
महाराजा सीता-वलभ कुळ सीता विण-मणा।।
यरां जैता तंगां अउर यक-रंगा जग अखै।
सकौ गावौ जीहा अवस निस दीहा अज सखै।।

भुजंग – **लक्षण** – इण वर्णिक छंद में 3 यगण, 1 लघु अर 1 गुरु व्है।

उदाहरण – कसी कोउ तेत्रीस साहीज कीधा।
लखा प्राण लोउ सवे द्रग दिद्धा।।

भणै एव देवा भुजां तुझ स्वामी।
सुरां त्राहि ऊंवाहि त्रैलोक स्वाम॥

तोटक – (स, स, ग, स)

लक्षण – ई में 4 सगण व्है। ओ वर्णिक छंद है।

उदाहरण – रघुराज सिहायक संत रहै।
कथ भेद जिकौ अज वेद कहै॥
दसमाथ बिभंज भराथ दखं।
पहनाथ समाथ अनाथ पखं॥
पत सीता प्रवीत सनीत पढ़ं।
दळजीत लखां रिणजीत दढं॥
रसना किसना जिण क्रीत रटौ।
दुख प्राचत ओघ अमोघ परौ॥

प्रतिमाक्षरा – (स, ज, स, स)

लक्षण – इण वर्णिक छंद में 1 सगण, 1 जगण अर 2 सगण व्है।

उदाहरण – लिछमीस रांम अण भंग लखौ।
परमेस पाळ जन दीन पखौ॥
हर पाप ताप दुख–ताप हरी।
तिण पाय रेण रिख नार तरी॥

पंचचामर –

लक्षण – ओ वर्णिक छंद है जिणमें 1 जगण, 1 रगण, 1 जगण, 1 रगण, 1 जगण अर अंत में 1 गुरु हुवै।

उदाहरण – रउद्द सद्ध आसमुद्ध साहसिकक सुरई।
कठोर थोर घोर छोर पारसिक्क पूरई॥
अध्धं गाभ गेह गाहि गालिबाल किज्जई।
बिछोई जोइ तेह नाथ भेच्छ लोडि लिज्जई॥

घनाक्षरी – ओ मुक्त वर्णिक छंद है ।

लक्षण – घनाक्षरी चार चरणां री हुवै। इणरा हरैक चरण में 31 आखर अर अंत वर्ण गुरु व्है। सामान्य रूप में इणमें 16/15 पर विराम हुया करै। इणनै ही मनहरण छंद या कवित कयौ जावै।

उदाहरण – केसव कमळ नैन संत सुख देन संभू,
भूमि पार भजतै अनेक भंग्त टार भय।
निपट अनाथन के नाथ ररस्यंध नांम,
नरकनिवारन नरेस्वर निपुन नय॥
किसन कहत करूना के निध कौसलेस, परत सुरेस भुजंगेस
और रिखेस पय।
सियनाथ भखतन काज जन लाज रख,
जग सिरताज माहाराज रघुनाज जय॥

संवैयौ –लक्षण – ओ वर्णिक छंद है जिणमें 22 सूं लैर 26 वर्ण व्है। इणरी खास बात आ है क इणमें सरू सूं लैर आखिर ताई कोई एक गण दुहराइजै। इणरै अंत रा बचयौड़ा आखरा में लघु गुरु आद रैवै।

भेद – सवैया रा पांच भेद हुवै –

(1) मदिरा, (2) मतगयंद, (3) सुमुखी, (4) मोतियादास, (5) मोतियादाम (मुक्तहरा), (5) दुर्मिल ।

(1) मदिरा सवैया –

लक्षण – इणमें 22 आखर हुवै जिणमें 7 भगण अर आखिर में गुरु हुवै।

SII SII SII SII SII SII SII S

(2) मतगयंद (मालती) सवैया –

लक्षण – ओ 23 आखरां रौ हुवै जिणमें 7 भगण अर अंत में गुरु हुवै।

SII SII SII SII SII SII SII SS

मदिरा सवैया रै आगै एक गुरु जोड़ण सूं मतगयंद सवैया बणै।

(3) सुमुखी सवैया –

ओ भी 23 आखरां रौ हुवै जिणमें 7 सगण अर आखिर में एक लघु हुवै।

ISI ISI ISI ISI ISI ISI ISI IS

मदिरा सवैया रै पैली एक लघु जोड़ण सूं सुमुखी बणै।

(4) किरीट सवैया –

ओ 24 आखरां रौ हुवै अर इणमें 8 भगण हुवै।

SII SII SII SII SII SII SII SII

मदिरा सवैया रै आगै रै आगै दो लघु जोड़ण सूं किरीट सवैया बणै।

(5) दुर्मिल सवैया –

ओ भी 24 आखरां रौ छंद है जिणमें 8 सगण हुवै।

IIS IIS IIS IIS IIS IIS IIS IIS

मदिरा सवैया रै पैली दो लघु जोड़ण सूं दुर्मिल बणै।

(6) अरसात सवैया –

ओ 24 आखरां रौ छंद है जिणमें 7 भगण अर एक रगण हुवै।

SII SII SII SII SII SII SII SIS

(7) सुंदरी सवैया –

ओ 24 आखरां रौ छंद है जिणमें 8 सगण अर एक गुरु हुवै।

IS IIS IIS IIS IIS IIS IIS IIS S

(8) उपजाति सवैया –

इणमें 22 अर 26 आखर हुवै अर अलग अलग सवैया छंदा रा मेळ सूं उपजाति सवैया बणै।

विद्यार्थियां नै छंद री मात्रावां रौ ज्ञान करावण खातर अठै कीं उदाहरण दिया जा रिया है। मात्रिक अर वर्णिक दोनूं तरै रा कीं नमूना देखीजै।

मात्रिक छंदां रा नमूनां –

दोहा, सोरठा, गीतिका, सरसी

वर्णिक छंदा रा कीं नमूना –

तोटक, शिखरणी, पंचचामर

दूहां रौ उदाहरण – मात्रिक छंद

II II IIS SIS II II IIS SI

(1) नितु नितु नवला साँढ़िया, नितु नित नवला साजि।
SII SS SIII SS SII SI
पिंगळ राजा पाठवइ ढोला तेड़न काजि ॥
SS SII IIIS SIIII S SI

(2) थाणै चाकर चिड़बड़ै, राजकुरब री हांण ।
II SSS IIS SI SI S SI
कुण राखै ला साथियाँ, लोक राज री काण ॥

सोरठा रौ उदाहरण – मात्रिक छंद

ऽ। ।ऽ ऽ ऽ। ऽऽ ऽ। ।ऽ ।ऽ

(1) बाबहिया तू चोर, थारी चाँच कटाविसूं ।
ऽ।। ऽऽ ऽ। ।। ऽ।। ऽ ऽ।।।
रातिज दीन्ही लोर, मइं जाण्यउ प्री आवियउ ॥
।। ।। ।ऽ ।ऽ। ।। ऽऽ ऽऽ ।। ऽ

(2) जन पद करूं प्रणाम, पद पोच्या जिण पूत नै।
।। ।। ।ऽ ।ऽ। ।। ।। ऽऽ ऽ। ऽ

गुण गुण तणी लगाम, जिण मुख झेली ढंग है॥

गीतिका छंद

लक्षण –ओ भी मात्रिक छंद है अर इणमें 26 मात्रावां अर आखिर में लघु गुरु हुवै। बारैह नै आठ मात्रावां पै यति लागै –

उदाहरण –

।।ऽ। ऽ ।ऽ। ऽ।। ऽ। ऽ। ।ऽ।।

(1) करतार भू अधार केसव धाार पांण सुधांनख
।।ऽ। ऽ। ।ऽ। ऽ।। ऽ ।।। ।ऽ ।।
रघुनाथ देव समाथ राजत मां विसर समांनुख ॥
।। ऽ। ।। ।ऽ।ऽ ।। ऽ। ऽ। ।ऽ।।

(2) जळ पाजं बंध उतारजै कपि साज सेन सकाजय ।
।।ऽ ।ऽ। । ऽ। ऽ। ।ऽ। ऽ ।।ऽ।।

रसनां किसना सु जांम आळ उचार सौ रघुराजयं ॥

सरसी **लक्षण** – ओ मात्रिक छंद है।

सरसी रौ उदाहरण –

ऽ।ऽ	।।ऽ	।।	।।।ऽ	ऽ।	।।।।	।ऽ।
पंथई	पयठ	वल	बयठई,	झाउ	अवझड	कुरीय।
ऽ।ऽऽ	ऽ।	ऽ।।	ऽ।।।	।ऽ	ऽऽ।	
उंबराधी	छाइ	अंबर	सूझवइ	नहू	सूरीय ॥	
।।।ऽ	ऽ।	ऽ।।	ऽऽ	ऽ।।।	।।।ऽ।	
परभवे	गोइ	पंवग	पाए	दूह	भ्रह	बडबडाई।
।।	।ऽ।ऽ	।ऽ।	ऽ।।	।।।।	ऽ।ऽ	।।।।
तउ	अपारजे	अभंग	अवाधु,	अतुल	एहवा	अनुमि ङ्क॥

वर्णिकछंद

तोटक लक्षण – ई में 4 सगण व्है। ओ वर्णिक छंद है।

उदाहरण –

।।ऽ। ।ऽ।। ऽ। ।ऽ

रघुराज सिहायक संत रहै।

।।ऽ। ।ऽ ।।ऽ। ।ऽ
कथ भेद जिकौ अजवेद कहै।।
।।ऽ। ।ऽ। ।ऽ। ।ऽ
दसमाथ बिभंज भराथ दखं ।
।।ऽ। ।ऽ। ।ऽ। ।ऽ
पहनाथ समाथ उनाथ पखं ङ्क
।। ऽ। ।ऽ। ।ऽ। ।ऽ
पत सीत प्रवीत सनीत पढं।
।। ऽ। ।ऽ ।। ।ऽ
दळजीत लखां रिण जीत दढं।
।।ऽ ।।ऽ ।। ऽ। ।ऽ
रसना किसना जिण क्रीत रटौ।।
।। ऽ।। ऽ। ।ऽ। ।ऽ
दुख प्राचत ओघ अमोघ दटौ ।।

शिखरणी –

इण वर्णिक छंद में एक रै बाद एक यगण, मगण, नगण, सगण अर मगर रै अंत में लघु गुरु हुवै।

उदाहरण –

।ऽ ।ऽ ऽ। ।।। ।। ऽऽ ।। ।ऽ
तवौ राघौ राघौ करम अघ दाघौ तन तणा।
।ऽऽऽ ऽऽ ।।। ।। ऽऽ ।। ।ऽ
महाराजा सीता चलभ कुळ मीता विण मणा ।।
।ऽ ऽऽ ऽऽ ।।। ।। ऽऽ ।। ।ऽ
यरां जैता जंगा अउर यक-रंगा जग अखै।
।ऽ ऽऽ ऽऽ ।।। ।। ऽऽ ।। ।ऽ
सकौ गावौ जीहा अवस निस दीहा अज सखै।।

पंचचामर –

लक्षण – ओ वर्णिक छंद है जिणमें 1 जगण, 1 रगण, 1 जगण, 1 रगण, 1 जगणं अर अंत में 1 गुरु हुवै।

उदाहरण –

।ऽ। ऽ। ऽ।ऽ। ऽ।ऽ। ऽ।ऽ

रउद्ध सद्ध आसमुद्ध साहसिक्क सुरई।
।ऽ। ऽ। ऽ। ऽ। ऽ।ऽ। ऽ।ऽ
कठोर थोर घोर छोर पारसिक्क पुरई।।
।ऽ। ऽ। ।। ऽ। ऽ।ऽ। ऽ।ऽ
अहंग गाम गेह गाहि गालिबाल किज्जई।
।ऽ। ऽ। ऽ। ऽ। ऽ। ऽ।ऽ
बिछोई जोइ तेह नाथ मेच्छ लोडि लिज्जई।।

❑❑❑

अलंकार

अलंकार सबद ''अलम्'' सूं लिकळयौ है। ''अलम्'' सबद ग्रीक भाषा रा अरूम रै अरथ रै बराबर है जिणरो मतलब है स्वर्ण (सोनो)। संस्कृत भाषा में अलम् रौ अरथ, आभूषण लियौ जा सकै है। संस्कृत रा नामी आचार्य वामन इणी अरथ में ''अलम'' नै लेता थका ''काव्यालंकारसूत्र'' में लिख्यौ है। – **सौन्दर्यमलंकार :** (इति)

इणरौ मतलब ओ है क काव्य रौ फुटरापौ (सौन्दर्य) अलंकार ही है। आचार्य दण्डी भी खुद री पोथी ''काव्यादर्श'' में साफ लिख्यो है क संधि, संध्यंग, वृत्ति आदि में अलंकार रूप में ही मान्य है। इण तरै काव्य री सौभा करण वाळा तत्त्व अलंकार कहीजै – अलंक्रियते अनेन इति अलंकार : ओ अलंकार रौ एक सींव रौ अरथ है। जै इणनै बड़ा अरथ में देखां तो ठा पडै क अलंकारण रौ भाव ही अलंकार है – अलंक्रियते भावे इति अलंकार:। इण तरै किणी काव्य री शौभा बढ़ावण वाळा धरमा नै गुण कैवै अर उणारै सबसूँ ज्यादा हेतु नै अलंकार कैवे – 'काव्यशोभाकर्तारौ धर्मा गुणा:' इण तरै अलंकार काव्य री देह नै सजावण अर संवारण वाळा तत्त्व अलंकार है अर रस उण री आतमा है। आचार्य राजशेखर खुद री गिणावणजोग पोथी 'काव्यमीमांसा' में इणी बात नै समझावता थका एक रूपक बांध्यौ है और उणमें लिख्यौ है 'क काव्य नै एक मिनख मानां तो सबद अर अरथ उणरी देह है, संस्कृत उणरौ मूंडौ है, प्राकृत भाषा उणरी भुजावां है, अपभ्रंश उणरी जंघावा है, पैशाची भाषा उणरा पग है अर मिश्र उणरी छाती है इण तरै बो काव्यपुरुष मस, प्रसन्न, मधुर, उदार अर औजस्वी है। रस उणरी आत्मा है रोवां (रोम-रोम) उणरां छं है, सवाल अर जवाब, पाळी (पहेली) वाणी रा विलास है और अनुप्रास अर उपमा वांनै शोभा देवै। इण तरै काव्य में अलंकार री महताऊ भोमका है। इणसूं आ बात भी सांमी आवै' क अलंकार रै बिना काव्य, नी है। जदी आचार्य जयदेव 'चन्द्रालोककार' आ बाद कैवै 'जिकी लोग अलंकार रै बिना सबद अर अरथ नै काव्य मानै है बै वां लोगां में शामिल है जिका ताप (उष्णता) रै बिना अगन रै मांनै है। इण तरै आ बात सिद्ध व्है' क काव्य में अलंकार री खास ठौड़ हुया करै। इण मत नै मानणवाळा आचार्य में आचार्य भामह रौ नांव सिरै गिणीजै जिणां खुदरी पोथी रौ नांव ही 'काव्यालंकार' राख्यौ है। भामह रै पछै आचार्य दण्डी, आचार्य उद्भट, आचार्य रूद्रट, आचार्य प्रतिहारैदूराज इणी बात नै मानी है।

अलंकार आज कैई तरै रा है। कैई आचार्य 124 अलंकार तक मानै, पण आचार्य भरत रा नाट्यशास्त्र मे ंचार ही अलंकार हा – (1) उपमा (2) रूपक, (3) दीपक, (4) यमक। विष्णु धर्मोत्तर पुराण में 16 अर आचार्य भामह 38, आचार्य दण्डी 4, आचार्य वामन 32, आचार्य उद्भट 41, आचार्य रूद्रट 61 अर आचार्य भोज 72 अलंकारां रौ बरणाव करयौ है अर धीरे-धीरे 124 अलंकारां रा नांव गिणाईज्या। इण तरै संस्कृत भाषा रां आं अलंकारा री परम्परा प्राकृत, पालिअर अपभ्रशं सूं होती हुई आज री भाषारां, जिणमें राजस्थानी भी शामिल है, लग पूगी है। संस्कृत रा आचार्य भामह ही 'काव्यलंकार' पोथी में शब्दालंकार अर अर्थालंकार रै रूप में काव्य रा दो भेद कर्‌या है। जिणमें शब्दालंकार 2 हा अर 36 अर्थालंकार हा। आचार्य दण्डी 35 अर्थालंकारा अर 5 शब्दालंकारां रौ बरणाव करयौ, पण ''अग्रिपुराण'' पोथी में अलंकारा रा तीन भाष करया गया जिणामें 4 शब्दालंकार, 10 अर्थालंकार अर 10 उभयालंकारां रौ (दोनू भांत रा) लेखो दीनो है। चमत्कार ही अलंकार रो प्राण मानीज्यौ है। चमत्कार रै बिना अलंकार रा सारा साधन हुता थकां भी अलंकार नहीं हुवै। 'साहित्यदर्पण' में अलंकारां री परिभाषा दैता थकां लिख्यौ है –

शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्मा : शोभातिसांविन: ।
रस दीनुपकुर्वन्तोऽलंकारास्ते ऽलंकादिवत् ॥

इणरौ सार ओ 'क रस इत्याद रौ उपगार कर' र काव्य री शौभा बढ़ावणवाळा सबद अर अरथ रा जिका अस्थायी धरम है, बे अलंकार है। जिण भांत गैहणा-गांठा (आभूषण) शरीर री शौभा बढावता थका आत्मा रौ उपगार करै उणी भांत काव्य रूपी देह-सबद अर अरथ-री-शौभा बढावै अर काव्य री आत्मा-रस-रौ उपगार करै। इणमें सबद अर अरथ काव्य रा शरीर है अर रस काव्य री आत्मा है।

साधारण अरथ में सजावट री जिनस (वस्तु) अलंकार बाजै अर सजयौड़ी जिनस (वस्तु) अलंकृत। एक लुगाई नै फूठरा कपड़ा अर गैहण पैरायर सजायौ जावै तो उणरा शरीर री शौभा, उणरौ फुटरापौ बढ जावै। इणी भांत किणी कविता या उक्ति नै उणरा अलंकारां सूं सजायौ जावै तो बा बेसी सुंदर, मनमोवणी, लुभावणी, चमत्कारिणी अर असरदाय हुय जावै। पण आ बात ध्यान राखण री है 'क जिण भांत किणी स्त्री नै स्वाभविकया ठीक तरीकै सूं नीं सज्जाय' र उणनै नकली या अस्वाभाविक अर बेढंग सज्जायी-संवारी जावै तो बा भद्दी अर भूंडी दिखण लागै। ठीक इणी तरै, जे काव्य नै भी उचित अर स्वाभाविक अलंकारां सू अलंकृत नहीं कर' र, अलंकार लाद दिया जावै तो उणरौ फुटरापौ बढण री बजाय घट जावै अर बा अपरोकी अर बेडोळ लागण लागै। इण तरै अलंकारां रौ काव्य में प्रयोग सावचेती अर सहज रूप सूं हूवणौ चाईजै। अलंकारां रौ दिखावौ नीं हूयर सहजता अर स्वाभाविकता हूणी चाइजै।

काव्यशास्त्र रा कई आचार्य अलंकार नै ही काव्य री आत्मा मानै पण काव्य री आत्मा तो रस है। बिना अलंकार रै भी काव्य कहीजै। बिना सज्जी-संवती सुंदरी री सुदरता री दाईं, बिना अलंकारां रै सरस काव्य री रमणीयता ज्यूं री त्यूं रैवौ। अलंकार सुन्दरता नै बढावण रौ काम करै पण जै फुटरापौ है ही कोनी तो अलंकारां सूं बो ओर कुरूप ही लागसी। जिण भांत मरयौड़ी लुगाई नै आभूषण एक जींवती सुंदरी नीं बणा सकै उणी भांत रस अर भाव सूं विहूण उक्ति नै अलंकार जीवंत काव्य नी बणाय सकै7 आ बात दूजी है क भोळा-भाळा लोग अलंकार वाळी साधारण बात नै कविता समझ र वाह-वाह करण लाग जावै जैड़ौ फ फगत चमत्कार भरी उक्ति नै सुण र कवि-सम्मेलन अर मुशायरा में लोग करै।

कवि अलंकार सूं एक साधारण उक्ति नै भी प्रभावी, मनमोवणी, फूटरी, चमत्कारभरी बणा दैवै। यूं अलंकार काव्य सारू जरूरी कोनी पण काव्य री शोभा बढावण खातर कवि कविता में अलंकारां रौ प्रयोग करै। इणसूं काव्य रौ सौन्दर्य बढ़ै। अलंकार काव्य री शैली है - बात नै कैवण री शैलियां घणी है, ई खातर अलंकार भी भोत है। साहित्य शास्त्रां में तो खास-खास शैलियां नै अलंकारां रै रूप में गिणार वांरो निरूपण करियौ है।

अलंकारां रा भेद -

किणी ई वाक्य में 'सबद' अर 'अरथ' ई खास हुवै। इण विचार सूं अलंकारां रा दो बडा भेद है, जिका इण भांत है -

1. शब्दगत यानी शब्दालंकार अर
2. अर्थगत यानी अर्थालंकार ।

इण भांत साहित्य शास्त्रियां अलंकारां नै मोटे रूप सूं दो भागां में बाट्या है। जियां के ऊपर लिख्यौ है। अलंकार काव्य रै शरीर-सबद अर अरथ - में रैवणवाळा धरम है, इण वास्तै जिका अलंकार सबदां रा फुटरापा नै बढा र काव्य री शौभा बढ़ावै, वै शब्दालंकार अर जिका अरथां री सुन्दरता बढा र काव्य री शौभा बढावै बै अर्थालंकार है। शब्दालंकार किणी खास सबदां माथै निभर रैवै, वां सबदां नै हटायां वै अलंकार नी रैवै। इणरै ठीक उल्टे अर्थालंकार अरथां माथै टिकयौड़ा रैवै अर इणी वास्ते उण अरथां रा वाचक सबद हटा र उणां री जागां पर्यायवाची सबदां रौ प्रयोग करियां सूं बै ज्यूं रा ज्यूं बण्या रैवै। राजस्थानी भाषा रा शब्दांलंकारां में अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति अर वैण (वयणा) सगाई अर अर्थालंकारां में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, व्यक्तिरेक, भ्रांतिमान, सन्देह, अपन्हुति, दीपक, दृष्टान्त, उदाहरण, काव्यलिंग, अन्योक्ति अतिशयोक्ति, ब्याज स्तुति, परसंख्या, स्वाभावोक्ति जैड़ा अलंकार, निणावणजोग है।

शब्दालंकार

अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, वैणसगाई

अनुप्रास अलंकार – ओ शब्दालंकार है।

आचार्य भामह 'काव्यालंकार' पोथी में अनुप्रास अलंकार री परिभाषा देता थका लिख्यौ है 'क ''सरूप'' अर्थात एक रूप रा वर्णां रौ विन्यास ही अनुप्रास है।''सरूपवर्णविन्यासमनुप्रांस प्रचक्षते'' आचार्य भामह इण अलंकार रा दो भेद करया है। (1) ग्राम्यानुप्रास (2) लाटानुप्रास। आचार्य उद्भट लाटानुप्रास व छैकानुप्रास नै अलग कर' र वांरी परिभाषा अर उदाहरण दे दिया। आचार्य उद्भट रै मुजब दो-दो तरै री एक जैड़ी उक्ति हुवण पर छेकानुप्रास व्है है। आचार्य भोजन कैवे 'कै जिका घणी दूर नीं है ऐड़ा वरणा री आवृत्ति ने अनुप्रास अलंकार कैवै।

(1) **छेकानुप्रास काव्य में** – किणी वर्ण या वर्ण समूह रो दो बार आवणौ।
(2) **वृत्त्यनुप्रास** – काव्य में किणी वर्ण या वर्ण समूह रो तीन या ज्यादा बार आवणौ।
(3) **श्रुत्यनुप्रास** – एक ही जागां सूं उच्चरण हूवणवाळा कई वर्णां रो आवणौ।
(4) **अन्त्यानुप्रास** – काव्य में सबदां या चरणां रै अन्त में आखरी दो सुरां री – (बीच रा व्यंजन सेती) आवृत्ति हूवणौ।
(5) **लाटानुप्रास** – जद कोई सबद दो या दो सूं ज्यादा बार आवै अर हर बार अरथ एक ही रैवै पण हरबार अन्वय बदळ जावै तद लाटानुप्रास कहीजै।
(6) **ध्यान्यानुप्रास** –

छेकानुप्रास – सारंग सिखर, निसद्दकरि ।
मरइ स कोमळ मुध्ध ॥

वृत्यनुप्रास – कूँझड़ियाँ करळव कियउ, धरि पाछिले वणेहि।
सूती साजण संभर्‌या, द्रह भरिया नयणेहि ॥

श्रुत्यनुप्रास – तंती नाद तंबोळ रस, सुरसि सुगंधउ जांह।

अन्त्यानुप्रास – सजण मिळ्‌या, मन ऊमग्यउ, अउगुण सहि गाळयाह।
सूका था सू पाल्हव्या, पाल्हवयि फळियांह ॥

लाटानुप्रास – मृगनयणी, मृगपतिमुखी, मृगमद तिलक निलाट।
मृगरिपु-कटि सुन्दर वणी, मारू अइहइ घाट॥

ध्वन्याप्रास – सड़-सड़ वाहि म कंबड़ी राँगाँ देह म चूरि ।

पुररुक्ति अलंकार –

परिभाषा – ओ एक शब्दालंकार है। पुनरुक्ति सूं मतलब है एक बार कयौड़ी बात नै बार-बार कैवणी। इण तरह अभिष्ट भाव नै रुचिकर वणावण खातर एक ही सबद री कई बार आवृत्ति करी जावै या क बो सबद बार-बार आवै। उणनै पुनरुक्ति कैवै। इणनै पुनरुक्ति भी कयौ जावै।

आचार्य उद्भट **पुनरुक्तवदाभास अलंकार** रौ सबसूं पैली विवेचन करता हुया उणरा नीचै लिख्या मुजब लक्षण बताया।

लक्षण – ''पुनरुक्ताभासम भिन्नवस्त्विबोद्भासि भिन्न रूपपद्म'' इणरौ अरथ है – जठै अलग रूप वाळा पद अभिन्न वस्तु री तरै उद्भासित व्है, वठै 'पुनरुक्तावदाभास' अलंकार हुया करै। मतलब ओ क जठै दो पद एकसा लागै पण वांरो अरथ न्यारा-न्यारा हुवै।

उदाहरण – पुनरुक्ति रौ उदाहरण

(1) उदग अलील अमर हरहासा ।
तिरपण तारण दीनदयाला ॥
म्हे कूडा म्हारा सतगुरु साचा।
काटो जलम जलमरा जाळ॥

(2) कोयल कंठा गीतमा।
धरती कोड करंत॥
बना अर बाडियां।
डेरा किया बसंत॥

यमक अलंकार –

यमक शब्दालंकार है। यम रौ अरथ है जोड़ो। इण तरै जठै वर्ण जोडै रै समान आवै वठै काव्य में यक अलंकार मिळै। भरतमुनि कैवै क यमक सबदां रौ अभ्यास है7 इणरौ मतलब औ है क जठै एक ही सबद बारम्बार आवै बठै यमक अलंकार व्है है। आचार्य भरत रै मुजब यमक रो 10 भेद हुवै। इणरां कीं नमूना इण भांत है। – (1) पादान्त (2) काँची, (3) समुद्गक, (4) विक्रान्त, (5) चक्रवाल, (6) सन्दष्ट, (7) आम्रेडित, (9) चतुर्त्य वसित, (10) माला ।

लक्षण – इण तरै जद कोई सबद दो या दो सूं ज्यादा बार आवै अर हर बार अरथ दूजौ हुवै – बठै यमक अलंकार मानीजै। कई बार पूरो सबद दुबारा नहीं आवै पण उण सबद रो कीं हिस्सो दुबार आवै जद भी यमक अलंकार ही हुवै।

उदाहरण – सारँग ले सागँ चली, सारँग पूगो आय।
सारँग ले सारँग धरयौ, सारँग सारँग माँय॥

श्लेष – ओ शब्दालंकार है। आचार्य भामह, आचार्य दण्डी, आचार्य वामन् श्लेष अलंकार नै अर्थालंकार रै रूप में मान्यौ है। पण आचार्य रुद्रट इणनै शब्दालंकार बतायौ है7 आचार्य रूद्रट श्लेष री परिभाषा देता कैवै कै ''वक्तु वमर्थमर्थ सुश्लि टाक्लिष्टा विविध पदसंधिः'' इणरौ मतलब है, कैवण में समर्थ, कठिण, आकठिण, सुशलिष्ट अर कैई पदां री संधियां सूं बणयौड़ा कैई वाक्यां रौ जठै एक साथै ही विधान हुवै उणनै श्लेष अलंकार कयौ जावै।

लक्षण – इण तरै जद वाक्य में एक सूं ज्यादा अरथ वाळा सबद या सबदां रा प्रयोग करिया जावै अर एक सूं ज्यादा अरथां रो बोध करायौ जावै वठै श्लेष बणै। श्लेष रा भी आठ भेद बताया है – (1) वर्ण, (2) पद, (3) लिंग, (4) भाषा, (5) प्रकृति, (6) प्रत्यय, (7) विभक्ति, (8) वचन।

उदाहरण – जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारौ करै, बढै अंधेरो होय॥

वक्रोक्ति – वक्रोक्ति यूं तो शब्दालंकार भी है अर अर्थालंकार भी पण इणरी गणना शब्दालंकार में ही ज्यादा हुवै।

लक्षण – काव्य में जठै बात किणी एक आशय सूं कही जावै पण सुणणवाळौ उणरौ दूजौ अरथ लगा लैवै बठै वक्राक्ति अलंकार हुया करै। इण तरै किणी एक अरथ में कयौड़ा सबद या वाक्य रौ कोई दूजौ आदमी जाणबुझ र कोई ओर अरथ लगा लैवै बठै वक्रोक्ति अलंकार हुवै।

भेद – वक्रोक्ति रा दो भेद हुवै – (1) श्लेष वक्रोक्ति, (2) काकु वक्रोक्ति।

श्लेष वक्रोक्ति – जठै उक्ति री वक्रता श्लेष पर टिकयौड़ी व्है वठै श्लेष वक्रोक्ति हुवै। श्लेष रा दो अरथां माइनै सूं बोलणियौ एक अरथ लैवै अर सुणणियौ दूजौ।

काकु वक्रोक्ति – जिण काव्य में कंठ री ध्वनि रै कारण वाक्य रौ दूजौ अरथ निकळै बठै काकु वक्रोक्ति हुवै।

उदाहरण – हुइ हरख घणै सिसुपाळ हालियौ,
ग्रन्थे गायौजेणि गति।
कुण जाणै सँगि हुआ केतला,
देस देस चा देसपति ॥

वयणसगाई अलंकार – ''वयणसगाई'' (वैणसगाई) डिंगळ काव्य रौ सबसूं व्हालौ अर नामी शब्दालंकार है। इणनै वरण सगाई या वरण सम्बन्ध भी कयौ गयौ है। ''वरण'' रौ अरथ है वर्ण अर्थात् अक्षर अर 'सगाई' रौ अरथ है सम्बन्ध, सगपण। इण तरै किणी छन्द रै हर चरण में पहला अक्षरां रै सम्बन्धां नै नियम मुजब ठीक तरै निभावणौ ही वयण सगाई है। इणमें पद्य रा हर चरण रै पैलड़ा सबद रै सरू में जिकौ आखर (वर्ण) आवै, बोई वरण उणरै सबसूं आखिर में सबद रै पैली भी आवै अर जे आखरी सबद रै पैलां नी आ सकै तो बिचाळै या अंत में आवै। इण तरै 'वयणसगाई' रा आदि, मध्य अर अन्त तीन भेद हुवै। जिणांनै आदिमेळ, मध्यमेळ अर अन्तमेळ कयौ जावै।

डिंगळ काव्य में ''वयणसगाई'' अलंकार रौ घणौ प्रयोग हुयौ है। डिंगळ कवि आपरा काव्य में इण अलंकार नै अपणायौ है। इणसूं काव्य री पद योजना या बरणाव में अर खास तौर सूं उणरा वाचन में एक अनूठौ चमत्कार आ जावै अर इण सूं रस री बरखा सी व्हैती लागै। राजस्थानी रा कविराज सूरजमल्ल मीसण वयण सगाई बाबत खुद री पोथी वंशभास्कर में लिखियौ है –

''वृत चरन के आदि बरन जो, ताहि के उपअंत बहुल सो इक सौं लैरू च्यारि लग अति बर, मध्यम, अधक अधिकतर तम पर नाम बरन सम्बन्ध अलंकृति, अर्धन मैं हु करत यह अनुसृति।''

प्रसिद्ध लक्षण ग्रन्थ – ''रुघनाथ रूपक गीतां रौ'' में चयण सगाई खातर बतायौ है, क – ''वयण सगाई वेस मिल्या सांच दोखण मिटै।''

इणरौ मतलब ओ 'क जद किणी काव्य में 'वयण सगाई' अलंकार आ जावै तो उणसूं काव्य रा सब दोष मिट जावै। इण तरै ''वयण सगाई'' री डिंगळ काव्य में बड़ी महत्ता मानीजी है। कैई रचनाकार 'वयण सगाई' नै अनुप्रास रौ एक भेद मांनै पण ज्यादातर कवियां अर विद्वानां री धारणा आई ज है' क वैण (वयण) सगाई एक न्यारौ– निरवाळौ अर चावौ अलंकार है। डिंगळ काव्य में ओ शब्दानुप्रास जरूरी सो मान्यौ गयौ है।

वैण (वयण) सगाई रा लक्षण – ''रघुवरजस प्रकास'' में ''वैणसगाई'' रा लक्षण अर उदाहरण इण भांत दिया है –

दूहो – वयण सगाई तीन विध, आद मध्य तुक अंत।
मध्य तेल हरि मह महण, तारण दास अनंत।।

इण पौथी में 'वयणसगाई' री तीन विधि अर कई प्रकार बताया है।

वैण (वयण) सगाई रा उदाहरण –

लेणा देणा लंक, भुजडंड राघव भांमणै।
आपायत अणसंक सूर दता दसरथ तणा।।

पैली तुक में उतिम (1) दूजी तुक में मध्यम (2) तीजी तुक में मध्यम (3) चौथी तुक में अधमाधम (4) अे च्यार वैणसगाई ।

जद छंद रा किणी चरण में पैला सबद रा पैला वर्ण री आवृत्ति आखरी सबद रै आदि, मध्य या अंत, में हुवै तद वैण (वयण) सगाई मानीजै।

वैण सगाई रा भेद –

'वैण सगाई' रा तीन भेद है – (1) आदिमेळ वैणसगाई
(2) मध्य मेळ वैणसगाई
(3) अन्तमेळ वैणसगाई

आदिमेळवैण (वयण) सगाई – लक्षण – जद काव्य में पैला सबद रा आदिवर्ण री आवृत्ति (आवणौ) चरण रै अतं रा सबद रै पैली में हुवै तो उणनै 'आदिमेळ वैणसगाई' कयौ जावै।

उदाहरण देखीजै – मिलतां ऊतरिया मदर, साकुर बाधा सेल।
मिजमानां जिम मंडिया, खोबांबाजी खेल।।
राजा आगै पार रै, जंग कुबंगा जीत।

राजा पग बांधै रसा, राजां कुळ री रीत॥

मध्यमेळवैणसगाई –

लक्षण – जठै काव्य में पैला सबद रै आदिवर्ण री आवृत्ति चरण रै आखरी सबद रै मध्य (बिचालै) में हुवै बठै 'मध्यमेळ वैणसगाई' हुवै।

उदाहरण – रण हालीजै चारणां। चाहे अब लग चैन।
करै सुहड़ जिसड़ी कहो, विध सो दूर वणै न॥

अन्तमेळवैण सगाई –

लक्षण – जिण काव्य में पैला सबद रै आदिवर्ण री आवृत्ति चरण रै अन्त रा सबद रै आखर में हुवै–वठै 'अन्तमेळ वैण' सगाई मानीजै।

उदाहरण – लाऊं प सिर लाज हूं, सदा कहाऊं दास।
गणवइ। गाऊं तूझ गुण, पाऊं वीर प्रकार॥

उदाहरण –

चारूं चरणां में वयण सगाई –

बीकम वरसां बीतियां, गुण चौ चंद गुणीस ।
बिसहर तिथि गुरु जेठ बदि समय पकट्टी सीस॥

तीन चरणां में वयणसगाई –

सासई दोहामयी, मीसण सूरजमाल।
जंपै भड़खाणी जठै, सुणै कायरां साल।

दो चरणां में वचणसगाई –

सहणी सबरी हूं सखी, दो उर उळटी दाह।
दूध लजाणो पूत तिम, वळय लजाणो नाह॥

एक चरण में वयणसगाई –
नाग! द्रमंका की पड़े नागण! धर मचकाय।
इणरा भोगणहार जे आज भिड़ाणा आयङ्क॥

इण तरै ''वैणसाई'' डिंगळ रौ एक खास अलंकार है जिणमें चरण रा पैला सबद रो पैलड़ो आखर साधारण रूप में उण चरण रै आखरी सबद रै पैला आख्रर सूं मिळै।

उदाहरण –

''गण वई ! गाउं तुझ गुण, पाऊं वीस प्रकार।'' इणमें ''गण'' तथा ''पाऊ'' अर ''प्रकास'' में वेण सगाई अलंकार है। डिंगळ काव्य में ओ नियम है क जै आखरां री वैण-सगाई मिळ जावै तो दग्धाक्षरां, अशुभ गणां अर अशुभ द्विगणां रो थोड़ो भी दोष नी लागै।
आ बात इण दूहा सूं कथीजी है।
आवै इण भाषा अमल, वैण सगाई वेस।
दग्ध अगण बद दुगण रौ, लागै नहीं लवलेस॥

वयणसगाई रा भेद – वयण सगाई रा तीन भेद मानीज्या है।

1. उत्तम, 2. मध्यम, 3. अधम।

उत्तम वयणसगाई रौ नमूनौ इण भांत है –

1. सपत धात चौरंग लिखमी सह।
कमंधज चंदनामौ करे॥

मध्यम रौ उदाहरण इण तरै है –

2. ऊन्हाळै जिमिक आगि ।
उजेणि अकाळ झड़ाळ अछेह।

अधम रौ नमूनौ इण भांत है –

3. धज नेजा खग ढाहतौ।
डेरा दुहूं दिया देठाले ।

अर्थालंकार

उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, व्यतिरेक, विभावना, विरोधाभास, भ्रांतिमान, संदेह, अपन्हुति, दीपक, दृष्टांत, उदाहरण, काव्यलिंग, अन्योक्ति, अतिशयोक्ति, ब्याजस्तुति, परसंख्य, स्वाभावोक्ति।

उपमा अलंकार – ओ अर्थालंकार है।

आचार्य भामह उपमा री परिभाषा दैवता कैवे कै

विरुद्धेनोपमानेन देशकालक्रियादिभिः।
उपमेयस्य यत्साभ्यं गुणलेशेन सोपमाङ्क।।

इण रौ मतलब है देश, समय, क्रिया आद रै आधार माथै विरूद्ध उपमान सूं उपमेय री जिकी समानता दीखै उणनै उपमा कैवै। आचार्य भामह कैवै क जठै किं सादृश्य दीखै वठै उपमा अलंकार हुया करै। उपमा अलंकार रा 32 भेद बताईजै।

लक्षण – उपमा अलंकार में किणी वस्तु नै दूजी वस्तु रै समान बतायौ जावै। आं दोनूं वस्तुवां में कोई अेड़ा गुण हुवै जिका दोनूवां में मिळै – ऐ साधारण धरम या क साधारण गुण कहीजै। इण साधारण धरम सूं ही दोनूं वस्तुवां में समानता दिखाईजै।

(1) उपमेय – जिणसूं दूजां री समानता दिखाईजै।
(2) उपमान – कोई खास वस्तु जिणरै बराबर उपमेय नै बतायौ जावै।
(3) वाचक सबद – बो सबद जिणसूं उपमेय अर उपमान में समानता दिखाईजै।
(4) साधारण धर्म – बो गुण या क्रिया जिकी उपमेय अर उपमान दोनुवां में हुवै।

उपमा अलंकार रा भेद – उपमा रा दो भेद मानीज्या है –

(1) पूर्णोपमा (2) लुप्तोपमा

उपमा अलंकार रा कई विद्वान नीचै लिख्या तीन भेद बताया है –
(1) पूर्णोपमा (2) लुप्तोपमा (3) मालोपमा

पूर्णोंपमा – ओ अर्थालंकार है अर उपमा रौ भेद है।

लक्षण – जद उपमा में उपमेय, उपमान वाचक सबद अर साधारण धरम आं चारां रौ सबदा में लेखो व्है वठै पूर्णोंपमा अलंकार हुया करे।

उदाहरण – हे सखिए, परदेश प्री, तनय न जावई ताप।
बाबहियउ आसाढ जिम, विरहणी करई विलापङ्क।।

लुप्तोपमा – ओ भी अर्थांलंकार है अर उपमा रौ भेद है।

लक्षण – जद किणी काव्य में उपमेय, उपमान, वाचक सबद अर साधारण धरम आं चारो माइनै सूं एक, दो या तीन नहीं व्है बांरौ लोप हू जावै अथवा वांरौ लेख ही नीं हुवै वठै लुप्तोपमा अलंकार मानीजै।

उदाहरण – हंस चलण, कदळीह जंघ, कटि केहर जिम खीण।
मुख सिसहर, खंजर नयण, कुच श्रीफल कंठ वीण।।

मालोपमा – ओ भी अर्थालंकार है अर उपमा रौ ही भेद है।

लक्षण – जद उपमा में एक उपमेय रा कई उपमान हुवै उण काव्य में मालोपमा अलंकार मानीजै।

उदाहरण – चंदण देह कपूर रस, सीतळ गंगप्रवाह।
मनरंजण, तन उल्हवण, कदे मिलेसी नाह।।

रूपक अलंकार –

ओ अर्थाक्लंकार है। आचार्य भरत रूपक अलंकार रा लक्षण बतावता लिखै क कई तरै रा द्रव्या रै मेळ सूं गुणा पर टिकीयौड़ा अर आरोप रा बरणाव सूं भरियौड़ा रूपका अलंकार हुया करै। आचार्य भामह रै मुजब गुणां री समानता देख र उपमान सूं उपमय जिण तत्व री एकता दिखाई दैवै उणनै रूपक कयौ जावै। आचार्य दण्डी रै मुजब उपमा ही खतम हूय र रूपक कहीजै। (उपमैय तिराभूत भेदा रूपकमुच्यते) आचार्य दण्डी रै मुजब रूपक रा 18 भेद है।

लक्षण – इण भांत जद एक वस्तु ऊपर दूजी रो आरोपण करयौ जावै या जद एक चीज नै दूसरी रो रूप दे दियौ जावै तद रूपक अलंकार हुवै।

भेद – रूपक अलंकार रा तीन भेद है – (क) सांग रूपक
(ख) निरंग रूपक
(ग) परंपरित रूपक

उदाहरण – मुख कमळ ।

इणमें मुंडै नै कमळ बणायौं गयौ है या क मुंडै नै कमळ रौ रूप दियौ गयौ है।

सांग रूपक –

ओ रूपक अलंकार रौ भेद है अर अर्थालंकार कहीजै। कहीजै। डिंगळ काव्य में सांग रूपक गणो व्हालौ है जिणरा जूनी पोथ्यां में कई उदाहरण मिळै। सांग रूपक में जठै उपमेय ऊपर उपमान रो आरोपण करयौ जावै अर उपमान करयौ जावै अर उपमान रा अंगा रौ भी उपमेय रा अंगा ऊपर आरोपण कियौ जावै वठै सांग रूपक हुवै।

लक्षण – सांग रूपक काव्य में तद मानीजै जद उपमेय पर उपमान रौ आरोप करयौ जावै अर उपमान रा अंगां रौ भी उपमेय रा अंगा ऊपर आरोप करयौ जावै।

उदाहरण – छट्ठै प्रहरै दिवसकै, हुईज जीमणवार।
मन चावळ, तन लापसी, नैणज घी की धार।।

निरंग रूपक – ओ भी अर्थालंकार है अर रूपक रौ भेद है।

लक्षण – इण रूपक में उपमेय नै उपमान बणायौ जावै पण उपमान रा अंगां तै उपमेय रै साथ नहीं बताइजै। इण भांत निरंग रूपक में उपमान रौ आरोपण ही उपमेय पर करयौ जावै अर अंगां नै छोड दिया जावै।

उदाहरण – सखिए ऊगट माँजिणउ, खिजमति करइ अनंत।
मारू तन मंडप रच्यउ, मिलण सुहावा कंत।।

परम्परित रूपक –

लक्षण – इणमें दो रूपक हुया करै अर एक रूपक रौ कारण या आधार दूजौ रूपक हुवै।

उदाहरण – पंथी एक संदेसड़उ, लग ढोलइ पैहचाइ।
धंण कँमलाणी, कमंदणी सिसहर ऊगइ आइ।।

निदर्शना – ओ अर्थालंकार है।

लक्षण – जद काव्य में दो वस्तुवां या दो काम नै एक जैड़ा बतावण खातर एक बताया जावै वठै निदर्शना अलंकार हुवै।

उदाहरण – जम री मूंछां ताणबो, अंग लगावो आग।
अेक न भोळां। ऊबरो, जे खीजाणी जाग।।

उत्प्रेक्षा अलंकार –

आचार्य भामह री परिभाषा मुजब उपमान अर उपमेय रै साधारण धरम जिणमें साक्षात विवक्षित नहीं व्है अर जिकी उपमा रै कीं नैड़ी है अर जिणमें अैड़ा गुणां री अतिरंजना व्है जिणां री कोरी संभावना करी जा सकै बठै उत्प्रेक्षा अलंकार मानीजै। आचार्य दण्डी कैवै क चेतन या अचेतन री अैड़ी वृत्ति जिकै सूं दूजै रूप मे दूजी संभावना की जावै बठैऐ उत्प्रेक्षा हुवै। ''काव्यालंकार'' में आचार्य भामह आ ही बात इण मुजब कैवै –
अविवक्षितसामान्या किंचिच्योपमया सह।
अतद्गुण क्रियायोगादुत्प्रेक्षाऽप्रेक्षाऽतिशयान्विता।।

इणी बात नै आचार्य दण्डी इण भांत कयी है –

अन्यथैव स्थिता वृतिश्चेतनस्येतरस्य वा ।
अन्यथौत्प्रेक्षते यत्र तामुत्पेक्षां विदुर्यथा ।।

लक्षण – इण तरै कोई चीज जैड़ी है नहीं उणरी उण रूप में संभावना करणी उत्प्रेक्षा बाजै। कैवण रो मतलब ओ क जद एक चीज मानली जावै तद उत्प्रेक्षा अलंकार हुवै।

उदाहरण – नैण मानो कमळ है।

उत्प्रेक्षा रा भेद – उत्प्रेक्षा रा तीन भेद है –

(1) वस्तुत्प्रेक्षा
(2) हेतुत्प्रेक्षा
(3) फलोत्प्रेक्षा

वस्तुत्प्रेक्षा – ओ एक अर्थालंकार है अर उत्प्रेक्षा रौ भेद है।

लक्षण – काव्य में जठै एक वस्तु में दूजी वस्तु री संभावना करीजावै या क एक नै दूजी वस्तु मानली जावै वठै वस्तूत्प्रेक्षा अलंकार मानीजै।

उदाहरण – जंघ सुपत्तळ, करि कुंडळ, झीणी लम्ब–प्रलम्ब।
ढोला, एही मारूई, जाणि क कणयर–कंब।।

हेतुत्प्रेक्षा – ओ अर्थालंकार है अर उत्प्रेक्षा रौ भेद है।

लक्षण – जठै अहेतु में हेतु मान लियौ जावै वठै हेतु उत्प्रेक्षा मानीजै।

उदाहरण – वालँभ, दीपक पवन–भय, अंचळ–सरण पयट्ठ। कर–हीणउ धूणइ कमळ, जाँण पयोहर टिट्ठ।।

फलोत्प्रेक्षा – ओ भी अर्थालंकार है अर उत्प्रेक्षा रो ही भेद है।

लक्षण – जठै काव्य में अफळ में फळ री संभावना करी जावै वै फलोत्प्रेक्षा अलंकार हुवै।

उदाहरण – किरि कठचीत्र पूतळी निय करि।
चीत्रारइ लागी चित्रण।।

व्यतिरेक – ओ एक अर्थालंकार है जिणरा लक्षण इण भांत है।

लक्षण – जद उपमेय नै उपमान सूं किणी बात में बढ र दिखायौ जावै।

उदाहरण – और चढै गढ़ ऊपरां, नीसरणी बळ नीठ।
अजको धव पूगो उठै, माँकड़ मेल्हे पीठ।।

उदाहरण अलंकार – ओ एक अर्थालंकार है जिणरा लक्षण नीचै मुजब है।

लक्षण – जद एक बात कही जावै अर उणरा उदाहरण रूप में दूजी बात कहीं जावै अर आं दोनुवा नै किणी

उपमावाचक सबद सूं जोड़ दियौ, उणनै उदाहरण अलंकार कैवै।

उदाहरण – तरवर नदियांण सुरसरी सुरतर, सरपां गज ऐरावत से।
सरां नखत रजनीस मानसर, अवनीसां ओपम अवधेस॥

दीपक अलंकार –

ओ अर्थालंकार है। आचार्य भरतमुनि दीपक अलंकार री परिभाषा दैता थका कैवे क कैई तरै रा अदिकरणां में समायौड़ा सबदां नै ज्योतित या उजाळौ देवणिया सबदां रौ एक ही वाक्य में मेळ व्हे उणनै दीपक कैवै।

लक्षण – नानाधिकरणंस्थानां शब्दांना संप्रदीपत:। एव वाक्येन संयोगी यस्तदीपक मुच्यते।

आचार्य भामह दीपक अलंकार रै बाबत कैवै क जिण तरै दीयौ (दीपक) खुद री रोसणी (प्रकास) सूं किणी चीज नै प्रकाश दैवै उणी भांत दीपक अलंकार भी खुद रै सबदां रा उजास सूं काव्य नै जगमगाय देवै। इण खातर इण रौ दीपक नांव ठीक ही है। आचार्य वामन कैवै क उपमान अर उपमेय में एक क्रिया हूवण नै दीपक कईजै।

इण भांत काव्य में जद ''प्रस्तुत'' अर ''अप्रस्तुत'' नै एक ही धरम सूं अन्वित करयौ जावै, वठै दीपक अलंकार हुवै।

उदाहरण – डूंगर केरा बाहला, ओछाँ केरा नेह।
बहता वहै उंतावळा, छिटक दिखावै छेह॥

सन्देह अलंकार – ओ अर्थालंकार है। आचार्य भामह रै मुजब –

लक्षण – अपमानेन तत्वं च भंद च वदत: पुन:।
ससन्देह वच: स्तुत्ये ससंदेह विदुर्यथा॥

अर्थात् उपमान सूं तत्व अर भेद बतावण वाळा सन्देह सूं भरियौड़ा वचन ही संदेहालंकार रै रूप में जाणीजणा चाहीजै। पण आचार्य दण्डी इणनै उपमा अलंकार रै साथै ही मान्यौ है।

ई तरै जद सादृश्य रै कारणै एक वस्तु में कई वस्तुवां हूवण री संभावना दिखाई तो पड़ै पण की निस्वै नहीं हुवै वठै काव्य में संदेह अलंकार कहीजै।

उदाहरण –

'हरिमुख हे आली। किधौ, कैंधों उयो मयंक ?' हे सखी ! ओ हरि (प्रभु) रो मुखड़ौ है या चन्द्रमा उग्यौ है ? हरि रौ मूंडो देखर सखी तय नहीं कर सकी है क ओ मुखड़ो है या चांद है। इणमें दोनुवां री संभावना दिखै।

विभावना – ओ एक अर्थालंकार है।

लक्षण – जद कारण नहीं हुता थकां काम हू जावै बठै विभावना अलंकार हुवै। इणरै साथै ही अधूरा कारण सूं काम हूवण, रुकावट सूं कारज सिद्ध जावण, विपरीत कारण रै हुता हुया काम हू जावण अर किणी कान सूं कारण हुवै जद भी विभावना अलंकार हुवै।

उदाहरण – मूझ अचंभो हे सखी! कंत बखाणूं कीस ?
विण माथै बाढ़ै दळां, आंख हिये कै सीस ?

अपन्हुति – ओ एक अर्थालंकार है।

लक्षण – जठै काव्य में उपमेय रौ निषेध कर र उपमान हूवणौ कयौ जावै वठै अपन्हुति अर्थालंकार हुवै। हणमें सांच बात नै छुपाय र झूठी बात हूवणी बताई जावै।

उदाहरण – सीह न बाजो ठाकरां! दीन गुजारो दीह।
हाथळ पाड़ै हाथियां, सो भड़ वाजै सीह॥

काव्यलिंग – ओ अर्थालंकार है।

लक्षण – जठै काव्य में कोई बात कही जावै अर उणरी साख भी भरी जावै अर्थात् कहीजयौड़ी बात री पुष्टि हुवै वठै काव्यलिंग अलंकार कहीजै।

उदाहरण – डाकी ठाकर–रो रिजक, ताखा रो विख हेक।
गहळ मुवां ही ऊतरै, सुणिया सूर अनेक॥

परिकराँकूर – ओ अर्थालंकार है।

लक्षण – जठै काव्य में विशेष्य रौ प्रयोग साभिप्राय व्है वठै परिकाराँकुर अलंकार व्है। अर्थात् काव्य मे ंजद सभिप्राय विशेष्य या नाम रौ प्रयोग हुवै वठै परिकराकुंर अलंकार कहीजै।

उदाहरण – लाऊं प सिर लाज–हूं सदा कहाऊं दास।
गणवई ! गाऊं तूझ गुण, पाऊंवीर–प्रकास॥

अत्युक्ति – ओ अर्थालंकार है।

लक्षण – काव्य में जठै किणी जीज रौ लोकोतर बरणाव हुवै वठै अत्युक्ति अलंकार कहीजै।

उदाहरण – हेली ! की अचरज कहूं, कंत परां बळिहार।
घर में देखूं होय कर, रण में दोय हजार॥

विरोधाभास – ओ अर्थालंकार है।

लक्षण – जद काव्य रा बरणाव में विरोध नीं हूयां भी विरोध दीखै तद विरोधाभास अलंकार कहीजै। एक साथ नहीं रैवणमाळी वस्तुवां नै एक साथ राख दी जावै वठै विरोधाभास अलंकार व्है।

उदाहरण – संभारियाँ सँताप, वीसारिया न वीसरई।
काळे जा विचि काप, परहर तूँ फाटइ नहीं॥

अतिशयोक्ति –

जो एक अर्थालंकार है। विष्णुधर्मोंतर पुराण में लिखियौ है क बहुल उपमा गुणां रै कारण अतिशयोक्ति हुवै। आचार्य भामह री परिभाषा है क किणी कारणै जै कोई अेड़ौ कथन करयौ जाय जिणसूं लौकिक ज्ञान री सीमा लांघीजै उणनै अतिशयोक्ति कैवे। इणरौ मतलब ओ है क अतिशयोक्ति अलंकार में असाधारणता रो गुण हुया करै।

निमित्ततो वचो भतु लोकातिक्रान्तगोचरम ।

मन्यतेऽतिशयोक्ति तामलंकार तया यथा ॥

लक्षण – काव्यलंकार नाम री पोथी में आचार्य भामह अतिशयोक्ति अलंकार री आ परिभाषा दीनी। इणसूं आ बात साफ व्है क अतिशयोक्ति गुण अर क्रियावां री हुया करै, द्रव्य अर जाति री अतिशयोक्ति नी व्है।

उदाहरण – राति ज रूंनी निसह भरि, सुणी महाजनि लोई।
हाथाळी छाला पड्या, चीर निचोई निचोई॥

भ्रांतिमान – ओ एक अर्थालंकार है।

लक्षण – जद सादृश्य (एक जैड़ा होवण रै कारणै) उपमेय में उपमान रौ भ्रमं हू जावै अर्थात् जद उपमेय नै भूल सूं उपमान समझ लियौ जावै तद भ्रांतिमान हुवै।

उदाहरण – अहर रंग रत्तउ हुवइ, मुख काजळ मसि ब्रन्न।
जाण्यउ गुंजाहळ अछइ, तेण न ढूकउ मन्न॥

दृष्टान्त – ओ अर्थालंकार है।

लक्षण – जद पैली एक बात कही जावै अर फैर उणसूं मिलती दूजी बात पैली बात रै उदाहरण सरूप कही जावै उणनै दृष्टान्त अलंकार कयौ जावै। इणमें एक उपमेय अर दूजौ उपमान वाक्य हवै पण आं दोनू वाक्यां में बिम्ब–प्रतिबिम्ब भाव हुवै। इण तरै आं दोनूं वाक्यां रौ धरम अलग हूता थकां भी एक जैड़ौ व्है।

उदाहरण – सरसती न सूझइ, ताइ तूं सोझइ,
वाउआ ! हुअउ कि वाउळउ?
मन सरिसउ धावलउ मूढ मन,
पहि किम पूजइ पागळउ।

अन्योक्ति अलकार – ओ अर्थालंकार है।

अन्योक्ति अलंकार – अप्रस्तत प्रशंसा अलंकार रौ ही अेक भेद है। ''अप्रस्तुतप्रशंसा'' में अप्रस्तुत सबद रौ अरथ है ''वा बात जिकी प्रकरण सूं न्यारी हुवै–भिन्न हुवै'' अर प्रशंसा सबद रौ अरथ है – ''वरणन'' । कुल मिला र अरथ हुवै – जठै ''प्रकरण सूं न्यारी या भिन्न वस्तु रौ बरणाव हुवै।''

इणी ''अप्रस्तुतप्रशंसा'' रौ अेक भेद है – ''सारूप्य–निबंधना।'' इणी नै अन्यौक्ति कैवै।

लक्षण – जठै समान अप्रस्तुत री मारफत समान प्रस्तुत रौ ज्ञान करायौ जावै, उठै अन्यौक्ति अलंकार हुवै।

(1) – दानी हो सब जगत में, अेकै तुम मंदारर।
दारुन दुख दुखियान के अभिमत–फल–दातार।
अमिमत–फल–दातार, देव–गन सैवैं हित सौं।
सकल संपदां सोह, छोह किन राखौ चित सौं।
बरनै दीनदयाल, छाहं तव सुखद बखानी।
ताहि संदू जो दीन रहै, दुख तो कस दानी॥

इण कुंडळिया में समान अप्रस्तुत कल्पवृक्ष रौ बखाण कर'र किणी उदारचेता धनी पुरुष (समान प्रस्तुत) रौ ग्यान करायौ गयौ है।

(2) – रहिमन पाक्स कै समय, धरी कोकिलन मोन।
अब दादुर वक्ता भये, हमहि पूछिहै कौन॥

अन्योक्ति अलंकार रौ राजस्थानी भाषा काव्य रौ उदाहरण –

धरती धण न्हाई,
हरी हरी कूख सरसै।
बरसै रै बादळ बरसै,
अरसै रे घनश्याम बरसै।

अठै बिरखा रै प्रसंग रौ दरसावा है, पण बो अप्रस्तुत है अर प्रस्तुत चितराम री मारफत ओ प्रगट करयौ गयौ है कै मूरखां री सभा मांय विदवान चुप हुय जावै। इण प्रस्तुत विसै री प्रतीति अप्रस्तुत के किल अर दादुर रौ प्रसंग सामी राख र कराईजी है। इणी वास्तै इण अलंकार नै अन्य (अप्रस्तुत) री उक्ति यानी कै अन्यौक्ति कैवै।

व्याजस्तुति अलंकार – ओ अर्थालंकार है।

जठै निंदा सूं स्तुति या स्तुति सूं निदां करीजै, बठै ब्याजस्तुति अलंकार हुवै।

(1) निंदा री आड़ में स्तुति

उदाहरण (कवित्त) –

पानी एक जात हुतो गंगा के अन्हाइवे को,
तासों कहै कोऊ एक अधम सयान में ।
जाउ न पथिक उत बिपति बिसेषि होति,
मिलैगो महान कालकूट खान–पान में।
कहै पदमाकर भुजंगनि बंधेगे अंक,
संग में सुभारी भूत चलंगे मसान में ।
कमर कसैंगे गजरवाल ततकाल बिन,
अंवर फिरैगो तू दिगंबर दिसान में ।

इण कविता में सिनान करण वाळै नै ''जैर खावण नै मिलेला'' इत्याद बातां कैय र गंगाजी री निंदा करीजी है, पण वे सिनान करणवाळा नै महादेव रै समान बणाय देवैला, आ स्तुति निकळै।

(2) स्तुति री आड़ में निंदा

उदाहरण–सवयौ गिरिराज धरे छिगुनी नख पै जस आज लौ भूतल गावत है।

लछिराम सुरूप सरोज मनोज मयंकहु को सरमावत।
मुख सांवरौ रावरौ हेरत ही मन कौन के मोद न छावत है।
ब्रज के सिरताण गरीब निवाज तुम्हें सदा कूबर भावत है।।

इण सवया में ''कूबद्र भावण'' में प्रकट स्तुति है, पण मलळब निंदा सू है। आचार्य म्मट री मानता है, क

ब्याजस्तुतिर्मुखे निन्दा स्तुतिर्वारू ढिरन्याथा

इणरौ मतलब है 'क-जठै सरू में निंदा अर अंत में स्तुति लखावै या सरू में स्तुति अर आखिर निंदा दीखै उणनै ब्याज स्तुति अलंकार कैवै।

राजस्थानी काव्य रौ उदाहरण -

सूरां खोटो सूरपण, चूडां आब उतार।
हूं बळिहारी कायरां, सदा सुहागण नार।।

स्वाभावोक्ति -

ओ अर्थालंकार है। परिभाषा विष्णुधर्मोत्तरपुराण में लिख्यौ है क स्वरूप रौ यथा कथन करणौ ही स्वभावोक्ति है -

यथास्वरूपकथनं स्वभावोक्तिः। आचार्य दण्डी री परिभाषा इण तरै है - कैई अवस्थावां में स्थित पदार्थों रै रूप नै उणरा मूळ रूप में बतावण वाळा अलंकार नै स्वाभावोक्ति अलंकार कैवै।

लक्षण - नानावस्थं पदार्थानां रूपं साक्षादि वृष्पती ।
स्वाभावोक्तिश्च जातिश्चेत्थाद्या सालकृतिर्यथा।।

इण तरै जिको पदार्थ जैड़ौ है उणरौ स्वाभाविक रूप सूं कथन कर देणी ही स्वाभावोक्ति अलंकार है।

सार रूप सूं कयौ जा सकै है 'क जद काव्य में किणी वस्तु रै सभाव मुजब ठीक वैड़ो ही वरणाव करीजै बठै स्वाभावोक्ति अलंकार हुवै।

उदाहरण - जौ सत संकट करै सहाई।
तदपि हतौं रन, राम दुहाई।।

शब्दालंकारां रौ भेद

यमक अर श्लेष में अंतर -

यमक अलंकार में सबद कई बार आवै अर हर बार उणरौ अरथ बदळ जावै। इण तरै यमक में कई बार में कई-कई अरथ हुवै जदकै श्लेष में सबद एक ही बार आवै अर उणरा अरथ घणा हुवै। इण तरै यमक अर श्लेष में एक बात मिळै है क आं दोनुवां में एक सबद रा कई अरथ हुवै।

उदाहरण -

यमक - पहल मिले धण पूछियो, किण कीधा किण हथ्थ ?
बीजड़ साहे बोलियो, इण डाकण भू अथ्थ ।।

श्लेष - धड़ धड़ धड़कि धार धारूजळ
सिहर सिहर समरवह सिलाड़

श्लेष अर वक्रोक्ति में अंतर -

श्लेष में खास बात आ हुवै क एक सबद रा एक सूं ज्यादा अरथ हुवै। सबद रा ज्यादा अरथ हूणौ ही खास बात है। जदकै वक्रोक्ति अलंकार में एक आदमी री एक अरथ में कयोड़ी बात रौ दूजौ आदमी दूसरा अरथ री कल्पना कर सकै या उण बात नै सोच सकै। ओ ही वक्रोक्ति रौ प्रधान गुण है।

अर्थालंकारां रौ भेद

रूपक अर उत्प्रेक्षा –

रूपक में उपमेय नै उपमान बणा दियौ जावै जदकै उत्प्रेक्षा अलंकार में उपमेय नै उपमान मान लियौ जावै।

उदाहरण –

रूपक – चढि चढि ना हनि संग चढ़ी, भुजा देहि पसार।
अम्ह चंपा किस तुट्टणी, तुम्ह भमरा के भार॥

उत्प्रेक्षा – गज मोत्यां री दामणी, मुखड़े सोभा देत।
जाणे तारा पांत मिल, राख्यो चंद लपेट॥

उत्प्रेक्षा – पेख सहेली ! पार रा, झंडा खिण न रहाय।
अेकण बाण उतारिया, जाण सिखंडी जाय॥

अतृशयोक्ति – कीर कंवल अर कोकिला, अहि, गज, सिंह मराल।
उदैराज देख्या इता, लूंबत एक ही डाल॥

भ्रांतिमान अर संदेह –

सन्देह अलंकार में निश्चै या पक्कायत नहीं रैवै क कुणसी वस्तु है पण भ्रांति में निस्चै तो रैवै पण बो सांच नहीं व्है–झूठो निश्चै रैवै।

उदाहरण – **भ्रांतिमान –** चकह भयो बिछोह, अरूण संपुट दीयो।
चाहत रह्यो चकोर, देरू वदन छवि मालती॥

सन्देह – कइ रंभा इंद्राणी जाणि, कइ गोरी आई घटि मांणि।
कइ रति पति रामा रति रूप, चिंतइ मनिए किस्यूं सरूप॥

भ्रांति अर अपहनुति –

भ्रांतिमान अलंकार में बोलणियौ भ्रांति रै कारणै झूठ री थापना कर दैवै पण अपन्हुति में बोलणियौ जाणबूझर सांच झूठ री थापण करै।

भ्रांति – सहज ललाई सांपरत, प्रीतम धारी पांय ।
निरखै भरमै नायणी, जाव कदै मिल जाय ॥

अपन्हुति – श्रवण कीना सोव तणी रे, सीप सुघट मन छंद रे।
कुंडाल रे मिसि देखवा रे, आया सूरज चंद रे॥

रूपक अर अपन्हुति –

रूपक अलंकार में कोरो आरोपण हुवै जदकै अपन्हुति में आरोप अर निषेध दोनूं हुया करै।

उदाहरण –

रूपक – घोडां घर, ढालां पटळ, भालां थंभ वणाय।
जे ठाकर भौगै जमी, अवर किसो अपणाय॥

अपन्हुति – सीह न बाजो ठाकंरां ! दीन गुजारो दीह।
हाथळ पाड़ै हाथियां, सो भड़ बाजै सीह॥

स्वाभावोक्ति अर अतिश्योक्ति –

स्वाभावोक्ति अलंकार में स्वाभाविक बरणाय हुया करै अर्थात जैड़ौ हूवै, उणी रूप में उणरौ बरवाण करयौ

जावै जदकै अतिशयोक्ति में बरणाव बढ़ा चढ़ार करयौ जावै। उण बरणाव में अतिरंजना रैवै।

उदाहरण –

स्वाभावोक्ति – उक्कंबी सिर हथ्थड़ा, चाहंदी रस लुध्ध।
ऊंची चढि चात्रंगि जिऊ, मागि निहालइ मुध्ध।।

अतिशयोक्ति – तोपां धर दरजां पड़ो, झडै गिरां सिर झाट।
जाणै सागर खीर–रै, मंदर रो अरड़ाट।।

दृष्टान्त अर उदाहरण में अंतर –

दृष्टान्त में पैली एक बात कही जावै अर पछै उणसूं मिलती जुलती दूजी बात उदाहरण रूप में कही जावै। इण तरै दृष्टान्त में दो कथन हुया करै – एक सामी दीसै बो (प्रस्तुत) अर जिको सामी नहीं हुवै (अप्रस्तुत) कथन कहीजै। आ दोनुवां रा सम्बन्ध साधारण अर खास हुया करै – एक कथन साधारण अर दूजौ खास। इण तरै दृष्टान्त मे दो कथनां रौ साधारण धरम एक नहीं हुयर एक सो व्है। पण उदाहरण में एक बात कही जावै अर उणरा उदाहरण या नमूना रै रूप में दूजी बात कही जावै अर आं दोनुवां नै किणी उपमावाचक सबद सूं जोड़ दियौ जावै। इण तरै दृष्टान्त अर उदाहरण में समानता भी हुवै।

उदाहरण – **दृष्टान्त** –नहँ वीस ? त्रण झूंपड़ै धाड़ो अेथ खटाय।
थावै दादुर–थाप री, काळा रै फण काय ?

नमूना रा सवाल

(क) छंद संबंधी सवाल –

1. छंद री परिभाषा अर भेद लिखावौ।
2. दवावैत अर वचनिका पर टिप्पणियां लिखावा।
3. काव्य री आत्मा रस है अलंकार कोनी, इण कथन नै समझावौ।
4. वर्ण, यति, गण नै समझावौ।
5. तोटक अर्थालंकार, शब्दालंकार, मात्रिक छंद, वर्णिक छंद है।
   (वर्णिक छंद है)
6. सोरठा में 24, 16, 18, 26 मात्रावां हुवै। (24)
7. घनाक्षरी–सम मात्रिक, विषम मात्रिक, सम वर्णिक, वर्णिक मुक्तक छंद है। (वर्णिक मुक्तक)
8. छप्पय–सममात्रिक, विषममात्रिक, समवर्णिक, विषमवर्णिक छंद है।
   (विषयम मात्रिक)
9. रोळा–सममात्रिक, विषममात्रिक, सम वर्णिक, विषम वर्णिक छंद है। (सममात्रिक)
10. दूहा अर सोरठा रौ अंतर बतावौ।

(ख) अलंकार संबंधी सवाल –

1. अलंकार किणनै कैवै भली भांत समझा र लिखावौ।
2. (क) कांई अलंकार रै बिना काव्य नीं हुय सकै ?
   (ख) कांई काव्य रै वास्तै अलंकार जरूरी है ?
3. काव्य अर अलंकार में कांई संबंध है ?
4. अलंकार कित्ती तरै रा हुवै ? अलंकारां रा भेद बाबत जाणकारी दिरावौ।
5. अन्यौक्ति अलंकार री परिभाषा देवता थकां कोई उदाहरण दिरावौ।
6. ब्याजस्तुति अलंकार रा दो रूप किसा है ? दोनां रा ई उदाहरण देवता थकां फरक बतावौ।
7. नीचै लिख्या अलकांरा री परिभाषा अर उदाहरण लिखावौ–वैणसगाई, श्लेष, उत्प्रेक्षा, अपन्हुति,

दृष्टान्त, ब्याजस्तुति ।

❑❑❑